अनुक्रमणिका

अध्याय				पृष्ठ
१.	मेरी चट्टान	...	...	...
२.	मेरा गढ़	...	...	...
३.	मेरा छुड़ानेवाला	...	...	...
४.	मेरा ईश्वर	...	...	...
५.	मेरा बल	...	...	...
६.	मेरी ढाल	...	...	...
७.	मेरी मुक्ति का सींग	...	...	...
८.	मेरा ऊँचा गढ़	...	...	...

अध्याय १

मेरी चट्टान

परमेश्वर मेरी चट्टान है (भजन १८:२)। जीवन का पूरा आनन्द उठाने के लिए यह पहला आत्मिक अनुभव हमारे लिए बहुत आवश्यक है। परमेश्वर के वचन में हम देखते हैं कि हमारे प्रभु को चट्टान कहा गया है: वह चट्टान मसीह था (१ कुरिन्थियों १०:४)। इस्राएल की सन्तानों को कनान में प्रवेश करने के लिए ३८ वर्षों तक जंगलों में भटकना पड़ा। वह केवल एक मरुस्थल तथा बाँझ जंगल था। वहाँ पर पीने को पानी न था, देखने को कोई सुन्दर वृक्ष नहीं थे केवल चट्टाने हीं थीं। चट्टान से पानी निकला। उन्होंने पानी पिया और उनके जानवरों ने भी पानी पिया। उन्होंने उस चट्टान को अपने साथ चलते हुए देखा और उस चट्टान ने उन्हें पानी दिया। प्रभु यीशु मसीह का कितना स्पष्ट चित्रण हमारी चट्टान के रूप में है।

इसके पहले कि हम वास्तव में प्रभु का प्रेम चखें और उसकी शक्ति का अपने जीवन में अनुभव करें, हमें प्रभु मसीह को अपनी चट्टान के रूप में अवश्य जान लेना चाहिए। इसीलिए भजन को लिखने वाला भजन १८:२ में कहता है, "प्रभु मेरी चट्टान है।" प्रभु यीशु मसीह स्वयं को लूका ६:४७,४८ पदों में यही नाम देते हैं।" "जो कोई मेरे पास आता है, मेरी बातें सुनता है और उन्हें मानता है, ... वह उस मनुष्य के समान है, जिसने घर बनाते समय भूमि गहरी खोदकर एक चट्टान पर नींव डाली, और जब बाढ़ आई, तो तेज़ लहरें उस घर से टकराई, परन्तु उसे हिला न सकीं, क्योंकि उसकी नींव एक चट्टान पर थी।" देखिए प्रभु यीशु मसीह कितने सरल, स्पष्ट और ध्यान देने योग्य उदाहरणों के द्वारा गहरी सच्चाईयाँ सिखाते हैं, जिससे कि हम में से हर एक उन्हें समझ ले कि वह क्या कह रहे हैं यदि हमें एक

घर बनाना होता है, तो बुद्धिमान लोगों की तरह हम वर्षा आँधी के विषय मे विचार कर लेते हैं, जिससे कि हमें पूर्ण विश्वास हो जाए कि हम खतरों से बचे रहेंगे। बाढ़ अथवा तेज वर्षा आ सकती है। यह सारी आँधियाँ उन तकलीफों के विषय में बताती हैं, जिन से होकर हमें अपने जीवन में गुतरना होता हैं।

हम कितने होशियार, कितने महान् या कितने धनवान हैं, इसके कोई अन्तर नहीं पड़ता। हमें इन सामान्य परीक्षाओं से गुजरना पड़ता है। क्योंकि पृथ्वी पर पाप के कारण श्राप आया और इसीलिए मनुष्य होने के नाते हमें इस श्राप के लिए तैयार होना पड़ता है, जो पृथ्वी पर आया। यदि आप अपना घर दृढ़ चट्टान की नींव पर बना रहे हैं, जो कि प्रभु यीशु मसीह हैं, तब प्रभु कहते हैं, "बाढ़, वर्षा और आँधी को आने दो, तुम सुरक्षित हो, तुम स्थिर हो।" नहीं तो यह घर गिर जाएगा और यह गिरना बहुत हानिकारक होगा। जिन लोगों ने प्रभु यीशु मसीह का व्यक्तिगत अनुभव नहीं पाया है, उनकी तुलना उस घर से की गई है, जो बालू पर बनाया गया था लूका ६:४९। वह एकदम गिर जाएगा और उसका विनाश बड़ा भयानक होगा। इसका मतलब है कि वहाँ पर बहुत बड़ी क्षति, कष्ट और मृत्यु है। निश्चित और सुरक्षित होने के लिए आपको प्रभु यीशु मसीह का अपनी चट्टान और नींव के रूप में स्पष्ट अनुभव होना चाहिए। हम १ कुरिन्थियों ३:१०,११ में देखते हैं कि केवल एक ही सच्ची नींव है, जो किसी भी आँधी, वर्षा या बाढ़ से नहीं हिलायी जा सकती। प्रभु यीशु मसीह ने जीवन की हर आँधी चेलों को बताया, "मैं अपने प्राण देता हूँ ..... कोई उसे मुझसे छोनता नहीं, परन्तु मैं अपने आप ही देता हूँ; मुझे उसको देने का भी अधिकार है, और उसे फिर लेने का भी अधिकार है।" उन्होंने अपना प्रेम और अपनी सामर्थ हर एक को चंगा करके और आशीष

देकर प्रगट की। उनकी सामर्थ उस समय और भी अधिक थी, जब उन्होंने लोगों को अपने ऊपर कोड़े मारने और थूकने दिया।

एक बार चेले सामरियों से बहुत क्रोधित हो गए क्योंकि उन्होंने प्रभु यीशु मसीह को एक रात सोने के लिए जगह नहीं दी थी (लूका ९:५३)। प्रभु यीशु मसीह ने इन्हीं लोगों को कई अवसरों पर आशीष दी थी। अब वह यरूशलेम जाते समय सामरिया से होकर गुजर रहे थे। उन्होंने यूहन्ना और याकूब को यह पूछने को भेजा कि क्या सामरी लोग उन्हें रुकने की अनुमति देंगे, परन्तु उन्होंने रुकने की अनुमति देने से इन्कार कर दिया, जिससे याकूब और यूहन्ना बहूत क्रोधित होकर कहने लगे, "तुम लोग कृतघ्न हो। प्रभु यीशु मसीह ने कितनी ही बार तुम्हें बीमारियों से चंगाई देकर दिया दिखाई है, परन्तु तुम उन्हें एक रात तक ठहराने से इंकार करते हो।" फिर चेलों ने प्रभुजी से पूछा, "प्रभु हमें अनुमति दें कि हम स्वर्ग से आग बुलाकर इन लोगों को जला दें।" परन्तु प्रभुजी ने उन्हें यह कह कर डाँटा, "मैं नाश करने नहीं परन्तु बचाने आया हूँ।" इसीलिए उन्होंने अपनी इच्छा से उन्हें अपने ऊपर कोड़े मारने और थूकने दिया। यदि वह चाहते तो स्वयं ही स्वर्ग से आग बुला लेते क्योंकि उन्हें मृत्यु को जीतने और जीवन की आँधियों के ऊपर सामर्थ प्राप्त थी। उन्होंने अपनी खुशी से उन्हें ऐसा करने दिया। क्यों? ताकि हम पाप के श्राप से मुक्त हो जाएँ, और उसी दु:खद यातना के द्वारा वह समस्त संसार की अनन्त आशीष देना चाहते थे।

शैतान ने साचा था कि उस पर कोड़े मारने और थूकने के द्वारा वह विजयी हो सकता है, परन्तु प्रभु की उसी यातना के द्वारा शैतान कुचल दिया गया। इसीलिए, चाहे हम सबसे बुरे पापी हों, हम परमेश्वर के सामर्थी लोग बन सकते हैं। प्रभु यीशु ने जो सामर्थ दु:ख और यातना

उठाने में दर्शायी, वह आश्चर्य कर्मों में दिखाई गई सामर्थ से बहुत अधिक थी। प्रभु चाहता है कि यातनाओं के द्वारा एक मजबूत नींव पर स्थिर होने के लिए, हम उसे जानें। यदि हम ऐसी नींव पर आ गए हैं, तो फिर किसी भी तरह की यातनाएँ दुश्मन के द्वारा हम पर आ जाएँ, जैसे –कंगाली, लम्बी बीमारी, अत्याचार अथवा मृत्यु ही क्यों न आए, इनमें से कोई भी हमारी शान्ति और आनन्द नहीं छीन सकेगा। इसके विपरीत हम पाते हैं, कि हमारी शान्ति एक नदी की तरह बढ़ रही है। हमारी शान्ति या आनन्द हमारी जायदाद, सम्पत्ति या पद पर निर्भर नहीं करते। प्रभु हमें कहीं भी और किसी भी स्थिति में रखे, हमारी शान्ति बढ़ेगी।

जब आप समुद्र के किाने जाते हैं, तो आप लहरों को उठते हुए देख सकते हैं। एक बार जब मैं अमेरिका से जपान जहाज से जा रहा था, तब समुद्र में बहुत बड़ा तुफान आ गया। २५ घण्टों में जहाज केवल २ मील आगे बढ़ा। समुद्र की लहरें ८० फुट ऊँची उठीं और जहाज डगमगा रहा था। ऐसी क्रोधित लहरें आपको केवल सतह पर ही मिलेंगी। परन्तु यदि आप पानी में कुछ फुट नीचे जाएगें तो वहाँ पूरी शान्ति मिलेगी। सतह पर क्रोधित लहरें हैं, परन्तु नीचे शान्त स्थिति है, और यही हमारा अनुभव हो सकता है। हमारे दिलों में परमेश्वर की शान्ति, जो कि समझ से परे है और नदी की तरह है, रह सकती है। भजन संहिता ११९:१६५ में परमेश्वर का वचन कहता है, “तेरी व्यवस्था से प्रीति रखनेवालों को बड़ी शान्ति होती है, और उनको कोई भी ठोकर नहीं लगती।” इसी तरह यशायाह २६:३ में लिखा है, “जिसका मन तुझ में धीरज धरे हुए है, उसकी तू पूर्ण शान्ति के साथ रक्षा करता है।” प्रभु स्वयं कहते है; “मैं तुम्हें शान्ति देता हूँ, मैं अपनी शान्ति तुम्हें देता हूँ, मैं तुम्हें देता हूँ वह ऐसी शान्ति नहीं जो दुनिया देती है।” अपने पुनरुत्थान के बाद चेलों से जो पहला पद प्रभु ने कहा, वह था, “तुम्हें

शान्ति मिले।" पौलुस प्रेरित २ थिस्सु. ३:१६ में कहता है; "अब प्रभु जो शान्ति का सोता है, आप ही तुम्हें सदा और हर प्रकार से शान्ति दे।" यह शान्ति हमें जीवित उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह से मिलती है। इसीलिए वह चाहते हैं कि हम चट्टानी नींव पर आ जाएँ। इस प्रकार सांसारिक परिक्षाएँ हमारे विश्वास को हिलोन आ सकती हैं; परन्तु क्या आप सच्चाई के साथ कह सकते है; "हाँ, मेरा प्रभु मेरी चट्टान है।" क्या आप प्रभु के लिए विश्वास में दृढ़ता से खड़े रह सकते हैं? क्या भिन्न-भिन्न प्रकार के भय के कारण आप व्यथित और चिन्तित हैं? प्रभु चाहते हैं कि आप सरल विश्वास के द्वारा उनका एक चट्टान के रूप में निश्चिय व्यक्तिगत अनुभव प्राप्त कर लें।

अब प्रश्न उठ सकता है कि आप कैसे प्रमाणित कर सकते हैं कि वह एक जीवित उद्धारकर्ता है? पवित्र धर्मशास्त्र बाइबल में हमें सात प्रमाण दिए गए हैं कि वह एक जीवित उद्धारकर्ता है।

१. **मौत को निगल गया** : उद्धारकर्ता यीशु मसीह के आगमन से ७०० वर्ष पूर्व भविष्यवक्ता ने प्रतिज्ञा की थी कि वह आएंगे और हमारे वास्ते मृत्यु पर जय पाएंगे। वह मृत्यु को विजय में निगल लेंगे (यशायाह २५:८)। उसी भविष्यवक्ता ने प्रभु यीशु मसीह के जन्म के विषय में भी भविष्यवाणी की थी। किसी भी व्यक्ति के द्वारा जीते गये दुश्मनों में मृत्यु सबसे अधिक शक्तिशाली दुश्मन है। किसी ने मृत्यु पर कभी भी जय नहीं पाई। इससे कोई मतलब नहीं कि, लोग कितने लम्बे समय तक जीवित रहते हैं या कितने बड़े-बड़े कार्य करते हैं; जब मृत्यु का समय आता है, वे मर जाते हैं और फिर से जीवित नहीं हो सकते। परन्तु एक उदाहरण है, जिसने मौत को विजय में निगल लिया है। उसने उसे वैसे ही निगला जैसे हम

भोजन को निगल लेते हैं। यह पहला महान् प्रमाण है। मृत्यु को उस पर कोई शक्ति नहीं थी। उसने उसे आपके और मेरे लिए जीत लिया।

२. **मृत्यु के ऊपर विजय** : प्रभु यीशु मसीह ने स्वयं भविष्यवाणी की थी कि वह किस प्रकार तीसरे दिन मुर्दों में से जी उठेगा (मरकुस ९:३१)। कोई भी नहीं कह सकता, मैं अपना जीवन दूंगा और उसे फिर से वापस ले लूंगा। परन्तू प्रभु यीशु मसीह ने कहा, "कोई मेरा जीवन नहीं ले सकता, मुझे इसे देने का अधिकार है और फिर वापस ले लेने का भी अधिकार है" (युहन्ना १०:१८)। जैसी उसने भविष्यवाणी की थी, वह तीसरे दिन जीवित हुआ और दस बार भिन्न-भिन्न लोगों को दिखाई दिया।

३. **खाली कब्र** : जिस कब्र में उसे रखा गया था, वह आज तक खाली है (लूका २४:२,३)। संसार के सब भागों से लोग उसे देखने आते हैं, दूसरी सब कब्रें मुर्दों की हड्डियों मे भरी हुई है, परन्तु यह कब्र आज तक खाली पड़ी है।

४. **स्वर्गदूतों द्वारा घोषणा** : उसके जी उठने के दिन स्वर्गदूत भी आये और उन्होंने घोषणा की। स्वर्गदूत प्रभु यीशु मसीह के जन्म की घोषणा करने भी आए थे और वे उसके जी उठने की घोषणा करने भी आये। उन्होंने कहा; "वहा यहाँ नहीं है परन्तु जी उठा है (लुका २४:५)।" वह एक जीवित उद्धारकर्ता है। उसने हमारे लिए मृत्यु पर जय पाई है।

५. **उसका कई बार प्रगट होना** : जीवित होने के बाद वह भिन्न-भिन्न लोगों के सामने प्रगट हुआ। ५ बार पुनरुत्थान के ही दिन और ५ बार जी उठने के दूसरे दिन से लेकर स्वर्ग पर उठाये जाने के दिन तक। सबसे पहले वह मरियम मगदलीनी के सामने प्रगट हुए और उससे कहा, "हे स्त्री तू क्यों रोती है?" (यूहन्ना २०:१५) उसी दिन सुबह वह एक और स्त्री

से मिले (मत्ती २८:९)। तीसरी बार वह शमौन पतरस के सामने प्रगट हुए; चौथी बार दो चेलों के सामने प्रगट हुए जो इम्माउस जा रहे थे, और उसके बाद चेलों के सामने प्रगट हुए जब वे लोग दरवाजे और खिड़कियाँ बन्द करके ऊपर के कमरे में थे। उसके बाद वे ५०० चेलों के सामने प्रगट हुए (१ कुरन्थियों १५:६); फिर थोमा के लिए; फिर दुसरे चेलों के सामने तिबिरयास झील पर (यूहन्ना २१:४)। दसवीं बार वे बैतनिय्याह में स्वर्ग पर उठाए जाने के समय प्रगट हुए (लूका २४:५१)।

६. **स्वर्गारोहण के बाद प्रगट होना** : उसके बाद वे स्तिफनुस के सामने प्रगट हुए, जब उन पर पत्थर फेंके जा रहे थे, फिर शाऊल पर प्रगट हुए जब वह सड़क से दमिश्क जा रहा था। जब प्रभु ने उससे कहा, "शाऊल, शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?" और शाऊल ने पूछा, "हे प्रभु तू कौन है?" तब प्रभु ने कहा, "मैं यीशु हूँ, जिसे तू सताता है" (प्रेरितों के काम ९:४,५)।

७. **जीवित उद्धारकर्ता** : प्रभु यूहन्ना को प्रकाशित वाक्य १:१८ में बताते हैं; "मैं मर गया था, और अब देख, मैं युगानुयुग जीविता हूँ।" यही जीवित उद्धारकर्ता आपके मन मे आना चाहता है, कि हम अविनाशी शरीर प्राप्त कर उसके साथ अनन्तकाल तक रहें। चाहे कोई भी कठिनाई, तकलीफ, दर्द या यातना हो, आपके मन में शान्ति होगी। तब आप कहेंगे, चह मेरी चट्टान और मेरा उद्धार है, वह मुझे नियंत्रित करता है, वह मुझे सिखाता है। हर परिस्थिति में मैं अपने दिल में शान्ति पाता हूँ। इसी तरह से वह आप में जीवित चट्टान बन जाना चाहता है। आपके पाप और सजा को उठाने के लिए वह आपके बदले मर गया। उसे पाप का ज्ञान नहीं था, उसने कोई पाप नहीं किया था। उसमें सब सामर्थ है : मृत्यु के ऊपर

सामर्थ, बिमारियों, दुष्टात्माओं और सारी सृष्टि के ऊपर सामर्थ। फिर भी वह क्रूस पर मर गया। जो न्याय और सजा हम नहीं सह सकते उसे सहने के लिए उसने खुशी से अपने आप को दे दिया। उसने हमारे लिए यह सहा। अब वह आपके दिल में प्रवेश करने के लिए दिल के द्वारा को खटखटा रहा है। जिस सामर्थ से वह जीवित हुआ, उसी सामर्थ से वह हमारे जीवन की सब अन्धियों पर जय पाने में हमारी सहायता करता है। आप जहाँ कहीं भी होंगे, आप अपने दिल में उसकी शान्ति पायेंगे। वह आपको कभी नहीं छोड़ेगा। क्या आप ऐसा अनुभव चाहते हैं? कृपया जीवन के सब भय छोडकर उद्धारकर्ता में विश्राम कीजिए, जो कि जीवित चट्टान है। हम परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं, हमें यह अनुभव प्राप्त है और हम इसकी गवाही दे सकते हैं। यह आपका भी अनुभव हो सकता है। हमारा प्रभु आपको भी यह अनुभव दे।

अध्याय २

मेरा गढ़

अब हम देखत हैं कि जीवित उद्धारकर्ता, हमारी चट्टान, हमारा गढ़ भी है। पुराने दिनों में राजकुमार और राजा लोगों के पास अपनी सुरक्षा के लिए गढ़ होते थे। आज भी हम बहुत से मजबूत गढ़ संसार के विभिन्न भागों में देखते हैं। गढ़ बनाने से पहले इसकी सुरक्षा पर अच्छे से विचार करना होता है। उन्हें हर तरफ से सुरक्षा का प्रबन्ध करना पड़ता है, क्योंकि दुश्मन किसी भी तरफ से आक्रमण कर सकता है। उन्हें पानी और भोजन की व्यापक व्यवस्था करनी होती है। कई बार दुश्मनक ई दिनों या महीनों के लिए घेरा डाल देता है। कोई भी लापरवाही पराजय ला सकती है। बेलारी में टीपू सुल्तान ने एक फाँसी सी इन्जीनियर को किया बनाने का काम दिया था। उन्हें चारों ओर से ऊँची दीवार बनानी थी। इन्जीनियर ने योजना बनाई और एक बहुत मजबूत और अच्छे गढ़ का निर्माण किया। जब काम समाप्त हो गया तब वह इन्जीनियर राजा को गढ़ दिखाने ले गया। जब वे एक कोने में पहुँचे तब राजा ने किले के एकदम पास एक पहाड़ी देखी। तब टीपू सुल्तान ने इन्जीनियर से कहा, “मूर्ख आदमी, तुमने वह छोटी पहाड़ी किले के बाहर क्यों छोडी ? दुश्मन उस पहाड़ी पर से आकर हमें पराजित कर सकता है।” इन्जीनियर इतना निराश हुआ कि उसने आत्महत्या कर ली। कुछ वर्षों पश्चात् अंग्रंजों ने उसी पहाड़ी पर चढ़कर उस गढ़ पर कब्जा कर लिया और राजा को हरा दिया। एक छोटी सी लापरवाही टीपू सुल्तान के राज्य में एक बढ़ी पराजय ले आयी।

आत्मिक रूप से हम जीवन पर्यन्त की सुरक्षा चाहते है। प्रभु के वचन के अनुसार हमारा मसीही जीवन प्रतिदिन का युद्ध है; केवल कुछ सप्ताहों के लिए ही नहीं अपितु पूरे

जीवन भर के लिए। (इफिसियों ६:१२) में देखते हैं; “हमारा युद्ध शरीर और माँस से नहीं वरन प्रधानों से और अधिकारियों से और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।” दुश्मन भिन्न-भिन्न तरीकों से हम पर आक्रमण करता रहता है। जब वह हममें कोई दुर्बलता देखता है, हम पर आ धमकता है। बेलारी की इमारत चारों ओर से बहुत मजबूत थी। केवल एक छोटी की इमारत चारों ओर से बहुत मजबूत थी। केवल एक छोटी सी लापरवाही ने उसे पूर्णत: नष्ट कर दिया। यह गलती जानबूझकर नहीं की गई थी, पर एक लापरवाही थी। हमारे ऊपर हर तरह की परीक्षाएँ आती हैं, परन्तु प्रभु हमें शत्रु के सब आक्रमणों से बचाने के लिए हमारा गढ़ बन जाता है। और दाऊद का यही अनुभव था।

पहले शमुएल के १६ अध्याय में हम देखते हैं, कि परमेश्वर ने दाऊद को एक बेहतर राजा होने के लिए कैसे चुना। केवल एक चरवाहे के गोफन से दाऊद गोलियत राक्षस को मारने में सफल हुआ जिसकी ऊँचाई १३ फुट से भी अधिक थी। धन्यवादी होने के बदले शाऊल, के प्रति ईर्षालु हो गया और उसे तीन बार मारना चाहा। दाऊद को आश्रय की खोज में भाग जाना पडा। उसकी पत्नी, योनातान जैसा मित्र, उसके रिश्तेदार और यहाँ तक की उसके भाई भी उसे छिपाने और सुरक्षा प्रदान करने से डरते थे। अन्त में उसे एक गुफा में शरण मिली। वह गुफा, अदुल्लाम की गुफा, उसके लिए गढ़ बन गई (१ शमुएल २२:१,२)। उसे और कुछ नहीं मिल सका। उसके भाई और रिश्तेदार जो दु:ख और संकट में थे, उसके पास सुरक्षा के लिए आए। ये सब जो उसके पास आए बड़े दु:ख में थे, उनके पास न धन था, न भोजन और न युद्ध के शस्त्र और धन था, गुफा को घेर लिया। दाऊद और उसके जन भोजन

खरीदने के लिए भी बाहर नहीं जा सकते थे। ऊपर से यह कि बाहर से कोई भी सहायता करनेवाला नहीं था। केवल एक बात थी कि सहायता, सुरक्षा, भोजन और हर चीज के लिए परमेश्वर की दुहाई दी जाये। इस प्रकार से गुफा दाऊद के लिए एक बहुत दृढ़ गढ़ बन गई।

फिर एक आश्चर्य कर्म हुआ। शाऊल की सेना ने पूरी गुफा को घेर तो लिया, परन्तु न तो वे दाऊद के पास पहुँच सके और न उसे छू सके। पलस्तीन में अदुल्लाम की वह गुफा अभी भी देखी जा सकती है। यह बहुत ही आश्चर्यजनक है कि उन्हें सुरक्षा कैसे मिली, और उस छोटी सी गुफा में उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति कैसे हुई! भजन ३४,३७,३८,१०८ और ११८ दाऊद के द्वारा उस समय बनाए गए जब वह इस गुफा के अन्दर था। अब वह भजन संहिता ३४:१, ४, ७, १९, २० में कहता है कि उसने प्रभु को पुकारा और प्रभु ने उसकी सुन ली और उसे उसकी मुसीबतों से छुटकारा दिया; सब संकटों, क्लेषों और भय से छुडाया; और शाऊल या और किसी की भी सेना को उसे छूने नहीं दिया। परमेश्वर के दूत पूरे समय उसे घेरे रहते थे। केवल इतना ही नहीं परनतु उसके साथ के सारे लोगों को भोजन दिया गया। वह भजन ३४:१० में कहता है कि जवान सिंहों को भी कमी पड़ती है, परन्तु जो परमेश्वर का भय मानते हैं, उन्हें किसी चीज की कमी नहीं होती। उन्होंने जवान सिंहों को तराइयों में भोजन के लिए बहुत जोर से गरजते सुना होगा। परन्तु परमेश्वर आश्चर्यजनक रूप से गुफा के अन्दर ही उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करता रहा, और बहुत बड़ा पानी का सोता भी ले आया। आज भी उस गुफा के अन्दर पानी का वह सोता देखा जा सकता है। वे लोग बिना भोजन की परवाह किए या किसी और चीज की परवाह किए परमेश्वर की स्तुति और भजन गाते रहे। इस प्रकार से वह गुफा एक बहुत मजबूत गढ़ बन गई, और शाऊल की

पूरी सेना उन्हें नहीं जीत सकी। हमने ऐसा ही अनुभव १९३८ में क्वेटा में आए भुईडोल में किया था। प्रभु ने खतरे में हमारी रक्षा की। वह हमारा गढ़ बन गया। आगे भी वह गढ़ बनेगा यदि हम उस पर विश्वास करें और शक न करें। परन्तु हममें से बहुतेरे उस पर भरोसा नहीं रखते। हममें डाकिए जैसा विश्वास होता है। जब डाकिया २५ रु. का मनीआर्डर लाता है, तो २४ रु. के नोट और एक रुपये का छुट्टा देकर हमारे चेहरे की ओर देखता है। यह डाकिए का विश्वास है। हमें ऐसे देखने की कोई आवश्यकता नहीं है। हमारे बिना कुछ दर्शाए या बिना संकेत के प्रभु हमारी आवश्यकता की पूर्ति कर सकता है। प्रभु ने गुफा में उनकी सारी आवश्यकताओं पूर्ति की; क्योंकि वे हर सुबह उसकी स्तुति करते करते थे। इसी तरह से वे हर सुबह का आरम्भ करते थे।

भजन संहिता १०८:१-४ में यह स्पष्ट है कि दाऊद दिन का आरम्भ प्रार्थना से किया करता था। जब सब लोग गहरी नींद में होते थे, तब वह सारंगी और वीणा बजाकर गाने लगता, "हे यहोवा, मैं देश-देश के लोगों के मध्य में तेरा धन्यवाद करूँगा, और राज्य-राज्य के लोगों के मध्य में तेरा भजन गाऊँगा।" वह नाश्ते या दिन के भोजन के लिए चिन्ता नहीं करता था। वह गाते जाता और उसके साथी एक-एक कर उसके साथ गाने लगते थे। परन्तु कुछ साथी गाने के बदले गुफा के द्वारा की ओर देखते थे, यह सोचते हुए, "भोजन कैसे आएगा, और कहाँ से आएगा?" जब दाऊद गाता चला जाता था, पूरी जगह भोजन से भर जाती थी। हमें नहीं मालूम भोजन कैसे आया। पर, ऐसा बहुत दिनों तक होता रहा। इसीलिए दाऊद कहता है, "परमेश्वर मेरा गढ़ है।" और इसी तरह से प्रभु हम सब के लिए भी कर सकता है। वह हमारा मजबूत गढ़ हो सकता है। परन्तु हमें आवश्यक रूप से उस पर भरोसा रखना होगा और शक

नहीं करना होगा। सहायता के लिए मनुष्य की ओर मत देखिए। केवल उसकी ओर ताकते रहिए। अपने दिन का आरम्भ घुटने पर आकर स्वर्गीय गीतों के साथ करिए। आने वाले दुश्मनों की तरफ मत देखिए। अपने दुश्मनों को हराने के लिए सांसारिक शस्त्रों का प्रयोग मत करिए। यह काम प्रभु को करने दीजिए। वह आपका गढ़ बन जाएगा। इस प्रकार से आप इन अनुभवों को आत्मिक, अन:त और बने रहने वाले पाएँगे हमारा प्रभु अद्‌भूत उद्धारकर्ता है। वह एक जीवित और प्रेमी उद्धारकर्ता है। वह चाहता है कि हम उसके साथ स्वर्गीय राजा बनकर रहें। वह अपनी प्रतिज्ञाओं को पूर्ण करेगा और आपकी चट्टान और गढ़ बन जाएगा।

अध्याय – ३

मेरा छुड़ानेवाला

हम भजन १८:२ में देखते हैं; परमेश्वर का जन, दाऊद, किस प्रकार से बहुत सी समस्याओं और यातनाओं से गुजरा। इन सब से एक मनुष्य को गुजरना पड़ सकता है। दाऊद यह देखने लगा था कि हर क्लेष और यातना जो परमेश्वर ने उस पर आने दी असके पीछे उसे आत्मिक अनुभव देने का विचार था। अब वह कह रहा है, वह मेरा छुड़ानेवाला है। हमने भजन ३४ में पहले ही देखा है कि उसे उसके भय तकलीफों और क्लेषों से छुड़ाया गया। उसी तरह भजन १८:१७-१९ में हम देखते हैं कि उसे उसके संकटों, क्लेषों और भय ने पूर्ण छुटकारे का अनुभव हुआ था। सबसे पहले उसे उसके पापी स्वभाव से छुड़ाया जाना था। यह सबसे बड़ा छुटकारा है। यदि हम परमेश्वर के राज्य में कुछ भी हिस्सा चाहते हैं तो हमें यह छुटकारा प्राप्त होना चाहिए। अपनी मानुषिक गतिविधियों के द्वारा हममें से कोई भी अपने पापी स्वभाव से छुटकारा नहीं पा सकता। इच्छा शक्ति, लम्बी प्रार्थनाएँ, बाइबल का ज्ञान, उपवास तथा सारी शिक्षाओं को मानने से भी यह छुटकारा नहीं मिलता। केवल जब परमेश्वर का जीवन हममें आता है तो वह हमें दिखाता है कि हम कितने गिरे हुए, पापी और गन्दे स्वभाव के हैं।

उदाहरण के लिए, रोमियों ७:१७-२५ में देखिए पौलुस प्रेरित क्या गवाही देता है। वह कहता है, “मैं कैसा अभागा मनुष्य हूँ! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा?” (पद २४)। प्रभु का एक जन इन शब्दों में गवाही दे रहा है। उसने प्रभु के प्रकाश को अपने में आते देखा वह अपने भीतर पुराने स्वभाव के मार्ग को भी देख रहा है। यहाँ पर यह विचार है कि उन दिनों में जब कोई किसी की हत्या करता तब उसे दण्ड देने का एक अनोखा उपास होता था। वे

हत्यारे को मारे गए व्यक्ति की लाश के साथ बाँध देते थे, आँखों से आँखें, नाक से नाक, ठुड्डी से ठुड्डी मिलाकर और मुँह से मुँह मिलाकर। इस प्रकार से हत्यारे को अपना ही पाप देखता पड़ता था और जहाँ कहीं वह जाता वहाँ उसे उस मारे गए व्यक्ति के मृत शरीर को ले जातना पड़ता था। परिणाम स्वरूप कुछ समय बाद वह स्वयं भी मर जाता था।

यहाँ पर प्रेरित यही उदाहरण देता है। वह अपने शरीर को मुर्दा शरीर कहता है। जैसे एक हत्यारे को हर जगह मुर्दा शरीर लेकर जाना होता था, उसी प्रकार एक पापी को अपना पापी स्वभाव लेकर चलना पड़ता है। उस शरीर से उसे छुड़ाने की सामर्थ किसी में नहीं है। हम अपने आप को अपने पापी, आभागे और मृत्यु के दुष्ट शरीर से अपने ही स्वंय के प्रयासों से नहीं छुड़ा सकते। यद्यपि दाऊद परमेश्वर का एक सामर्थी जन था, परन्तु उसमें भी उसी प्रकार का स्वभाव था, जो हममें है। परन्तु प्रभु का धन्यवाद हो कि वह प्रभु से सामर्थी हाथ द्वारा उस पापी स्वभाव से छड़ाया गया।

स्थितियों का अवलोक करते हुए हम १ शमुएल १६:१८ में दाऊद की दशा के विषय में पढ़ते हैं। वह एक सामर्थी व्यक्ति था, एक योद्धा था, वाद्य बजाने में निपुण और ज्ञान से भरपूर था; वह परमेश्वर की सहायता का आनन्द उठाता था। फिर भी हम बाद में पढ़ते हैं कि उसका पापी स्वभाव उसे शर्मनाक पाप में खींच ले जाता है। भजन ५१ में जब उसने पाप से पश्चाताप किया और परमेश्वर से विनती की कि वह उसे छुड़ाए और बचाए, तब हम पढ़ते हैं कि उसे छुटकारा मिला। २ शमुएल सातवें अध्याय में हम एक मनुष्य के रूप में उसकी दशा के विषय में पढ़ते हैं। इस प्रकार से परमेश्वर हमें अपने वचन से दिखा रहा है कि हम बाह्य रूप से कितने ही सुसंस्कृत क्यों न हों; हम सब में वही पापी, भ्रष्ट और गन्दा स्वभाव है।

इसीलिए हम लगातार इस पापी स्वभाव द्वारा खींचे जाते हैं। जब तक हम इस पापी स्वभाव से छुडाए न जाएँ, हम इसी तरह से गिरेंगे।

२ शमुएल ११:१-५ में हम पढ़ते हैं कि एक सामर्थी राजा होने के नाते दाऊद को सेना के साथ जाना चाहिए था। पर वचन कहता हैं, "परन्तु दाऊद यरूशलेम में रह गया।" (पद १)। और इस प्रकार सतर्क न होने के कारण वह पाप में पड़ गया। जब वह छत पर घूमने गया तो एक स्त्री को नहाते देखा। राजा होने के नाते वह उस स्त्री को बुला सका। और फिर वह पाप में गिर गया (पद ४)। बड़ी चतुराई से वह एक व्यभिचारी बन गया। वह एक सामर्थी राजा था और वह एक ब्याही हुई स्त्री थी। उसने हित्ती उरिय्याह- - उस स्त्री के पति- - कोसेना से बुलाया। ताकि लोग यह समझे कि बच्चा उरिय्याह का है (पद ६)। इस प्रकार चतुराई से वह अपने पाप को छिपाना चाहता था। हम सोचते हैं, और पाप करने के तरीके निकालते हैं, और फिर उसको ढाँपते हैं। अब दाऊद सोच रहा था कि इस पाप को कैसे ढांपे और इस प्रकार से वह एक कपटी और सच्चाई को छिपाने वाला बन गया (पद ७)। उसने उरिय्याह से योआब और युध्द के बारे में जाने के उद्देश्य से बुलाया है। इसीलिए उसने बहुत दया के साथ और नम्रता के साथ बातचीत की, यद्यपि वह उरिय्याह के भलाई में दिलचस्पी नहीं रखना था (पद ८)। यह सब बाहरी दया और कपट, अपने पाप को ढांपने के लिए था। और इसी प्रकार से एक पापी कई तरीकों द्वारा, बहुत चतुराई के साथ अपने पापों को ढांपने का प्रयास करता है। यहाँ एक महान् राजा व्यभिचारी, कपटी, दिखावटी और झूठा बन गया। उरिय्याह ईश्वर का भय मानने वाला होने के कारण अपने घर नहीं गया (पद ९-११)। युद्ध के दिनों में किसी सैनिक को छुट्टी नहीं दी जाती ; सारी छुट्टी रद्द कर दी जाती है। पर यहाँ

उरिय्याह के बिना माँगे दाऊद राजा उसे छुट्टी दे रहा था। फिर भी उरिय्याह अपने घर नहीं गया, वह परमेश्वर से डरता था। उसने कहा, "मैं घर कैसे जा सकता हूँ जबकि मेता प्रभु युध्द में है।" (पद ११)। राजा ने सोचा, यह सामान्य रुप से घर नहीं जाएगा, इसलिए उसने उसे शराब पिलवा दी। उसके बाद भी उरिय्याह ने अपने घर जाने से मना कर दिया। इस प्रकार परमेश्वर का वचन एक साफ तस्वीर के रुप में हमें दिखा रहा है कि हमारी हालत और हमारा पापी स्वभाव क्या है। जब यह सब तरीके असफल हो गए, दाऊद ने योआब को एक पत्र लिखा (पद १५)। अब वह एक हत्यारा बन गया। उसने इस व्यक्ति को जो परमेश्वर से डरता था, युध्द में मरवा डाला। सारे सामर्थी कार्यो के करते हुए भी वह अभी भी अपने पापी स्वभाव में था।

परमेश्वर का वचन कितना सच्चा है। परमेश्वर के वचन के अनुसार हर मनुष्य का दिल सबके अधिक धोखेबाज है (यिर्मयाह १७:९)। हममें से सब ने, न केवल एक बार परन्तु अनेकों चतुराई से भरे उपाय अपने पापों को छिपाने के लिए काम में लाए है। तब अनुग्रह के परमेश्वर ने दाऊद को उसका पाप दिखाने के लिए नातान भविष्यवक्ता को भेजा। परमेश्वर का वचन कहता है, "जो अपने अपराध छिपा रखता है, उसका कार्य सफुल नहीं होता" (नितिवचन २८:१३)। परमेश्वर हमारे पापों को खोलकर सामने लाता है, ताकि वह उन्हें धो सके, माफ कर दे और हमें आशीष दे। परन्तु मनुष्य हमारे पाप इसलिए खोलकर दिखाता है, कि वह हमें शर्मिंदा करे। उसने पश्चाताप करना शुरू किया और परमेश्वर ने उसके पापों को माफ कर उसे उसके पुराने पापी स्वभाव से छुटकारा दिया। अपनी असफलता से उसने पाठ सीखा कि दुसरों की तरह उसमें भी पापमय स्वभाव था (भजन ५१:५)। परमेश्वर की दया

और माफी को प्राप्त करने की आन्तरिक इच्छा, सच्चे पश्चाताप का हो परिणाम होती है वह अपने को बचाने या निर्दोष साबित करने की कोशिश नही कर रहा था। परन्तु उसने अपने आप को नम्र और दीन किया। परमेश्वर की दया और करुणा हमें छोड नही देती। जो कोई भी उसके पास आया है, उन सब ने यह सीखा है कि वह उन्हें कभी नहीं छोडता, चाहे वह आनेवाला कितना भी बडा पापी क्यों न हो। न केवल उसने माफी माँगी परन्तु यह लालसा भी दिखाई कि वह अपने पापमय स्वभाव से पुर्णत: छुडाया जाए।

भजन ५१ में इस उद्देश्य के लिए दाऊद ने तीन शब्दों का उपयोग किया है। मुझे भली भांति धोकर, "मेरा अधर्म दूर कर और मेरा पाप छुड□ाकर मुझे शुध्द कर" (पद ७)। साफ करना, धोना और शुध्द करना ये तीन शब्द है। हम साधारण कपड़ों को झटक कर या ब्रुश से रगड़कर साफ, धुल रहित कर सकते है। गन्दे कपडे साबुन और पानी से धोए जाते है। परन्तु चाँन्दी और सोने को शुध्द करने के लिए आग की ज़रुरत पड़ती है। इसीलिए उसने तीन शब्दों का प्रयोग किया है : साफ करना, धोना और शुध्द करना। वह न केवल अपने पापों की क्षमा चाहता था, अपितु उन पापों का स्मरण तक मिटा देना चाहता था। वह चाहता था कि उसका पापमय स्वभाव पुरी तरह से बदल दिया जाए। वह पूर्ण छुटकारे की लालसा कर रह था (पद १४)। वह चाहता था कि पाप के द्वारा बनाया गया हर धब्बा हटाया जाय। बिल्कुल नया बनने के लिए वह एक नया स्वभाव चाहता था। प्रभु यीशु मसीह के पास आने से एक पापी इसी तरह छुटकारा पाता है। अब दाऊद कह सकता था, "परमेश्वर मेरी चट्टान है, वह मेरा गढ़ है, वह मेरा छुड़ानेवाला है। उसने मुझे मेरे पापमय स्वभाव से छुड़ाया, पाप की सामर्थ से छुड़ाया, शैतान के अधिकार से छुड़ाया, और शैतान की सब चालाकी भरी योजनाओं से छुड़ाया।"

पाप से छुटकारे के इस काम को केवल प्रभु यीशु मसीह ही पूरा कर सकते हैं। इसीलिए उन्होंने दु:ख सहा, वे मर गए और हमारा सामर्थी छुड़ानेवाला बनने के लिए फिर से जी उठे। प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु की सामर्थ को प्राप्त करने के द्वारा कोई भी मनुष्य चाहे वह कितना ही अभागा, भ्रष्ट या पापमय क्यों न हो, उसके पापमय स्वभाव से छड़ाया जा सकता है। हमारा प्रभु तीन उद्देश्यों के कारण हमारे लिए मरा। सबसे पहले वह पाप का दण्ड भुगतने के लिए मर गया। रोमियों ४:२५ के अनुसार वह हमारे अपराधों के लिए पकड़वाया गया और हमें धर्मी ठहराने के लिए वह फिर से जीवित हुआ, ताकि हमें दण्ड और न्याय से छुड़ा ले। यह आवश्यक है कि परमेश्वर पाप को दण्डित करें, क्योंकि वह न्यायी परमेश्वर है। परन्तु परमेश्वर होने के नाते उसके लिए यह भी आवश्यक हो जाता है कि वह हमसे प्रेम करे और हमें क्षमा करें। इन दो ईश्वरीय नियमों को पूरा करने के लिए वह हमारे लिए मर गया/. हमारे न्याय को उसने अपने ऊपर उठाया। हमारे पापमय विचारों और पापमय कार्यों के कारण उस पर थूका गया, उसके हाथ छेदे गये; उसकी बगल छेदी गयी; पीठ पर कोड़े मारे गए; उसके बाल नोच लिए गए और उसने यह सब कुछ स्वेच्छा से सह लिया।

दूसरी बात, हमें हमारे पापमय स्वभाव से छुड़ाने के लिए वह क्रुस पर मर गया (रोमियो ६:५,६)। उसका जीवन, जिसके द्वारा वह फिर से जीवित हुए, विश्वास के साथ ग्रहण करने पर हमें धर्मी बनाएगा और पाप पर जय देगा। इसी तरह दाऊद ने प्रभु को अपने छुटकारा देनेवाले के रूप में देखा : वह एक नये हृदय की लालसा कर रहा था, एक नये स्वभाव, एक नये जीवन की लालसा कर रहा था। क्योंकि वह पूर्ण छुटकारा चाहता था (भजन ५१:१०)।

जो परमेश्वर की महिमा को देखना चाहते हैं, उन्हें कुछ शर्तों को पूरा करना पड़ता है। इसीलिए अय्यूब को जो एक धर्मी और अच्छा आदमी था, परमेश्वर बहुत से दु:ख भरे अनुभवों से ले गया ताकि उसे परमेश्वर की पवित्रता और सामर्थ का व्यक्तिगत अनुभव दें। उसकी सारी जायदाद छीन ली गई; जानवर, भेड़ें ऊँट लूट लिए गए; उसका सारा शरीर चोटों और घावों से भर गया। इस प्रकार अय्यूब परमेश्वर को अपने छुड़ानेवाले के रूप में जान पाया (अय्युब ४२। इसी तरह से प्रभु यीशु मसीह आपका छुड़ानेवाला बनना चाहता है। वह आपके पाप क्षमा करना चाहता है, और उनका स्मरण मिटा कर पूरी तरह से आपको धोना और शूद्ध करना चाहता है। वह आपके दिल में एक नया स्वभाव देना चाहता है, वह हर चीज अनन्तकाल के लिए नई देना चाहता है। तब आप अपने मित्रों से या किसी से भी कहोगे, "वह मेरी चट्टान है, मेरा गढ़ है, मेरा छुड़ानेवाला है।" यह सब आपके अनुभव बन सकते हैं, यदि आप उसके पास आ जाएँ। अपने पापों को ढ़ाँपने का प्रयास न करें। ऐसा करने से आप उन्नति नहीं करेंगे। यदि आप अपने पापों को ढ़ाँपते रहेंगे तो एक दिन नरक की आग में आप पर भारी न्याय आएगा। अभी परमेश्वर आपका उद्धारकर्त्ता होना चाहता है। वह आपके पापो को क्षमा करना चाहता है, और आपको पापमय स्वभाव से छुड़ाना चाहता है। वह आपको एक नया स्वभाव देगा - - पूर्णत: नया। जैसे दाऊद ने उसकी दुहाई दी आप भी उसकी दुहाई दीजिए, "हे परमेश्वर! मुझ पर दया कीजिए। मैं अपने अपराधों को स्वीकार करता हूँ। मैंने आपके विरुद्ध पाप किया है। मुझे पूरी तरह से धोइए, मुझमें एक नया हृदय उत्पन्न कीजिए।"

अध्याय-४

मेरा ईश्वर

भजन १८:२ में चौथा नाम है, "मेरा ईश्वर," जिसका मतलब है; "मेरा अपना ईश्वर।" सब लोग ईश्वर के बारे में बात कर सकते हैं, परन्तु वे यह नहीं कह सकते, "वह मेरा ईश्वर है।" यह मुझे एक घटना की याद दिलाता है। परमेश्वर के एक दास के पास एक दिन कोई सन्देश नहीं था। सभा में लोग एक के बाद एक भजन गाते रहे। परन्तु वह परमेश्वर से प्रार्थना करता रहा कि उसे एक सन्देश मिले। थोड़ी देर बाद उसे खडे होकर कुछ कहना था पर अभी तक उसके पास कोई सन्देश नहीं था। इसलिए वह चिल्ला पड़ा, "हे मेरे ईश्वर, हे मेरे ईश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया।?" बहुत ही अपमानित महसूस करते हूए उसने अपने सहयोगियों को बताया कि "मेरी सेवा समाप्त हो गई है। इस जगह से मुझे अवश्य कहीं और चले जाना चाहिए। मैंने कितनी प्रार्थना की, परन्तु परमेश्वर ने मुझे कोई सन्देश नहीं दिया।" और वह किसी दूर जगह चला गया।

कुछ वर्षों बाद उसे एक विचार आया, "मुझे चलकर अपने पुराने मित्रों से मिलना चाहिए।" तो वह वापस आया। उसने कुछ पुराने मित्रों और महिलाओं से भेंट की जो हर सभा में विश्वासयोग्यता से आया करते थे। जब वह एक घर में आया तो उसने पाया कि वह महिला मर चुकी थी। परन्तु उसकी लड़की वहाँ थीं। उसने कहा, "श्रीमान, कृपया अन्दर आइए, मेरी माँ मर चुकी है, परन्तु मैं आपको जानती हूँ।" वह भीतर गया। उस जवान लड़की ने कहा, "श्रीमान् क्या यहाँ से जाने से पहले का अपना आखिरी सन्देश आपको याद है?" उस आदमी ने कहा, "हाँ, मैं उसे कभी नहीं भूला, मुझे बहुत अपमानित होना पड़ा था।" उस लड़की ने

कहा, “मैं भी उस सन्देश को नहीं भूल सकती। उस दिन, उस सुबह जब आप ने रो-रोकर ‘मेरे परमेश्वर! मेरे परमेश्वर! मेरे परमेश्वर!’ कहा, तब प्रभु ने मुझसे बातें की। आपने परमेश्वर को अपना ईश्वर कहकर पुकारा था। उसी सुबह प्रभु मेरा उद्धारकर्त्ता बन गया। अब मैं कह सकती हूँ वह मेरा उद्धारकर्त्ता, मेरा ईश्वर और मेरा बचानेवाला है।”

इसी प्रकार से वह मेरा ईश्वर, मेरा प्रभु और उद्धारकर्त्ता है, जिसने मुझे छुड़ाया। यदि आप किसी बच्चे के पिता की ओर संकेत करके कहेंगे, “वह मेरा पिता है,” तो वह बच्चा जोर देकर कहेगा, “नहीं, वह मेरे पिता है।” वह बच्चा बड़े प्रेम के साथ कह सकता है, “वह मेरे अपने पिता है।” एक भिखारी आपको पुकार सकता है, “पिता, पिता,” परन्तु आप उसके पिता नहीं है। इसी तरह प्रभुजी हमारे दयालु सृजनहार हैं, और इसमें कोई शक नहीं कि भिन्न-भिन्न समयों में वे हमारी प्रार्थना सुनते हैं। परन्तु आप फिर भी, “वह मेरा ईश्वर है,” कहने की स्थिति में न हों। आप को इस योग्य होना चाहिए कि उस बच्चे की तरह बड़े प्रेम के साथ, बड़ी निकटता के साथ आप कह सकें, “वह मेरा ईश्वर है, मेरा अपना ईश्वर है।”

मैंने उद्धार पाने से पहले बहुत सी बातों के लिए प्रार्थना की थी और वे सुन लीं गईं थीं। मैं यह विश्वास करता था कि वह जीवित परमेश्वर है, महान् परमेश्वर है, उद्‌भूत कार्य करने वाला परमेश्वर है। परन्तु मैं उस समय, “वह मेरा अपना परमेश्वर है, मेरा अपना उद्धारकर्त्ता है” नहीं कह सकता था। बहुत वर्षों पूर्व मैं इंग्लैण्ड में था। मेरे मित्रों द्वारा मुझसे एक प्रश्न पूछा जाता था, “भारत का सबसे सुन्दर भाग कौन सा है?” मैं बड़े घमण्ड के साथ और आनन्द के साथ कहता, “काश्मीर।” वे पूछते, “अब हमें काश्मीर के बारे में कुछ बताओ।” और मैं काश्मीर के विषय में घण्टों बात कर सकता था। “हमारा काश्मीर अद्‌भूत है, वह आपके

झरनों और घाटियों से बहुत ज्यादा सुन्दर है।" जो मैं कहता था, सब सच था। बड़े घमण्ड और आनन्द के साथ कहता था, "हमारा काश्मीर अद्भूत है।" परन्तू मैं वहाँ कभी नहीं गया था। जब मैं १९३५ में इंग्लैण्ड से वापस आया, तब मैं पहली बार काश्मीर गया। कितना बड़ा अन्तर है! किसी बात को सुनकर जानना और किसी बात को स्वयं देखने में कितना बड़ा अन्तर है। इसी प्रकार हमारा प्रभु कितना महान् है। वह कितना अद्भूत है! उसने मृत्यु पर जय पाई, वह फिर से जीवित हुआ, उसने हर एक से प्रेम किया। यह सब सच है। परन्तु क्या वह आपका व्यक्तिगत जीवित उद्धारकर्त्ता बन गया है? क्या आप उसे बहुत अच्छी तरह जानते हैं? क्या आप सारे दिन उसकी उपस्थिति को महसूस करते हैं? क्या आप उससे ऐसे बातें कर सकते हैं जैसे किसी मित्र से करते हैं? क्या आप कह सकते हैं, वह आपके साथ साथ रह रहा है? तब ही आप ह सकेंगें, "हाँ, मैं जानता हूँ वह मेरा अपना उद्धारकर्त्ता है। वह मेरा ईश्वर है। मेरा प्रभु है।"

यद्यपि दाऊद एक महान् सामर्थी आदमी था और उसमें परमेश्वर के लिए बड़ी लगन थी, परन्तु अपने संकटों के कई वर्षों बाद ही वह परमेश्वर को जान पाया उसके पहले नहीं। जब उसे उसके मित्रों और रिश्तेदारों ने छोड़ दिया, वह हर बात के लिए परमेश्वर की दुहाई देने लगा। हम तब ही पढ़ते हैं, परमेश्वर उसका बहुत ही निकट तथा प्रिय बन गया। उस समय के बाद से वह परमेश्वर के साथ स्वतन्त्र रूप से बातें कर सकता था। अब दाऊद अनुभव सेकह रहा है, "वह मेरी चट्टान है, मेरा गढ़ है, मेरा छुड़ानेवाला है, मेरा ईश्वर है।" और वह कहता है, "मैं परमेश्वर से अपने पिता, माता भाई या और सबसे बढ़कर प्रेम रखता हूँ। यह इसलिए कि संकट में किसी ने उसकी सहायता नहीं की। इसीलिए जब वह अदुल्लाम की गुफा

में आया, उसने जीवित परमेश्वर को पुकारा। वहाँ उसे जीवित परमेश्वर का निश्चित अनुभव हुआ। वहाँ उसे विजय का और स्तुति का एक नया गीत मिला। सभी परिस्थितियों में वह परमेश्वर की स्तुति कर सकता था।

यूहन्ना के सुसमाचार के २० वें अध्याय में हम देखते हैं, मरियम मगदलीनी भी सच्चाई के साथ कह सकती थी, "वह मेरा ईश्वर है।" धनवान यहूदी लोगों का अपने मुर्दों को गाड़ने का भिन्न तरीका है। यरूशलेम चार पहाड़ों पर बसा हुआ हैं। इसलिए वे कब्र नहीं खोद सकते। इसलिए धनवान लोग अपने पूरे घराने के लिए एक बड़ी कब्र नहीं खोद सकते। इसलिए धनवान लोग अपने पूरे घराने के लिए एक बड़ी कब्र खुदवा लेते हैं। कब्र के भीतर बाई तरफ लोगों के खड़े होने और देखने के लिए जगह होती है और दाहिनी और मुर्दे को लिटाने की जगह और पत्थर ढकने की जगह होती है। कब्र के बाहर एक बड़ा पत्थर होता है जिसमें ऊपर और नीचे सरकने के लिए कटाव होता है। यहूदियों की रीति के अनुसार प्रभु यीशु मसीह के मृत शरीर पर ईस्टर के दिन मसाले मलना आवश्यक था। इसलिए ईस्टर के दिन एकदम सुबह मरियम कुछ और स्त्रियों के साथ बड़े प्रेम और भक्तिपूर्वक प्रभु मसीह की देह पर मसाले मलने उसकी कब्र पर पहुँची। चौकीदार उसकी कब्र की निगरानी कर रहे थे और उस कब्र को उन्होंने बन्द कर रखा था। उन स्त्रियों को क्रोधित यहूदियों और सिपाहियों के क्रोध को सहना था। उन्हें उस बड़े पत्थर को हटाना था। इन सारी कठिनाइयों से होकर वे वहाँ पहुँची। उनके विश्वास के द्वारा पत्थर स्वर्गदूतों द्वारा लुढ़का दिया गया। कब्र को खाली देखकर बाकी सब स्त्रियाँ चली गई। परन्तु मरियम कब्र के बाहर खड़ी होकर रो रही थी (पद ११)। मैंने खुद भी वह कब्र देखी है। उस कब्र में दोनों और बैठने की जगह है। उसने दो पुरुषों को देखा, एक

सिरहाने और दूसरा पैताने बैठा था। उन्होंने उससे पूछा, “हे स्त्री तू क्यों रोती है?” उसने कहा, “क्योंकि वे मेरे प्रभु को उठा ले गए हैं, और मुझे नहीं मालूम उसे कहाँ रखा है” (पद १३)। प्रभु यीशु मसीह के लिए उसमें कितना मजबूत प्रेम और भक्ति थी। वह सारे क्रोधित यहूदियों और सिपाहियों का सामना करने को तैयार थी। यहाँ तक कि वह प्रभु की देह को उठाकर ले जाने को भी तैयार थी, यदि उन्होंने उसे कहीं रख दिया हो। वह अकेली थी। वह पूरे शरीर को कैसे ले जा सकती थी? परन्तु वह राजी थी।

अचानक ही प्रभु स्वयं उसके सामने प्रगट हुए (पद १५)। उसके प्रेम और भक्ति को जानते हुए वे प्रगट हुए और उससे बातें की। पहले उन्होंने उसे ‘हे स्त्री’ कह कर पुकारा। अब वह उसे उसका नाम ‘मरियम’ कह कर पुकार रहे थे (पद १६)। जिस क्षण उसने अपना नाम सुना, उसके सारे आँसू सूख गए और एकदम से वह प्रभु यीशु मसीह के पैर छूना चाहती थी। बडों के प्रति आदर दिखाने की यह सामान्य रीति है; जिस भक्ति से वे बड़ों का पैर छूते हैं, उसी भक्ति से वह प्रभु का पैर छूना चाहती थी। प्रभु उससे कह रहे थे, “मुझे मत छू; क्योंकि मैं अभी तक अपने पिता के पास ऊपर नहीं गया हूँ” (पद १७)। कुछ समय पश्चात् हमारे प्रभु उन स्त्रियों पर भी प्रगट हुए जो कब्र से जा रहीं थीं। ये शब्द हमें मत्ती २८:९ में मिलते हैं; “उन्होंने पास आकर और उसके पाँव पकडकर उसको दण्डवत किया।” यह दोनों घटनाएँ उसी ईस्टर की सुबह एक घण्टे के अन्दर घटीं। वे वापस आ रहीं थीं क्योंकि उन्होंने मरियम को अकेला छोड़ दिया था। रास्ते में प्रभु उन सभों से मिले और कहा, “नमस्ते।” वे इतनी आनंदित थीं कि उन्होंने उसके पैर पकड़ लिए। इस बार उन्होंने स्त्रियों को अपने पैर छूने दिए, परन्तु पहली बार उन्होंने मरियम से कहा था, “मुझे मत छू।”

भक्ति के हिसाब से वह सबसे आगे बढ़ी हुई थी, यहाँ तक कि पुरुष चेले तक छिपे हुए थे। परन्तु ऐसी स्त्री को प्रभु कह रहे थे, "मुझे मत छू" क्यों? उन्होंने स्वयं ही उत्तर दिया, "क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया, परन्तु मेरे भाइयों के पास जाकर उनसे कह दे, कि मैं अपने पिता और तुम्हारे पिता, अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जाता हूँ" (यूहन्ना २०:१७)। इसका अर्थ है, "अब मेरा परमेश्वर तुम्हारा परमेश्वर बन गया और अब मेरा पिता तुम्हारा पिता बन गया है।" इससे यह प्रमाणित होता है, कि दूसरी स्त्रियों पर प्रगट होने के पहले मत्ती २८:९ में जैसा दिया गया है, वह ऊपर गया और वापिस आया। हमें योग्य बनाने के लिए कि हम उसके पास जा सके, और हमें अपना भाग बना लेने के लिए उसने ऊपर जाने और नीचे आने में एक बहुत बड़ी और आवश्यक सेवा पूरी की। अब वह अविनाशी शरीर में था जिससे वह कहीं भी पहुँच सकता था, किसी भी समय, स्वर्ग के किसी भी भाग में वह पहूँच सकता था। वह एक अद्भूत शरीर था, एक महिमित और अविनाशी शरीर था। परमेश्वर का धन्यवाद हो, जब प्रभु दूसरी बार आएगा तब हमें भी ऐसा ही शरीर दिया जाएगा।

पहले यूहन्ना ३:२ में हमें उसके ऊपर स्वर्ग पर जाने का उद्देश्य मालूम होता है। हमें इब्रानियों ९:११, १२ में बताया गया है कि वह बड़े और स्वर्गीयतम्बू में हमारा स्वर्गीय महायाजक है। वह स्वर्गीय पवित्र स्थान में अपना ही लोहू लेकर प्रवेश कर गया। अब देखिए पुराने नियम काल में क्या हुआ। लैव्यव्यवस्था के २३ अध्याय में एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण पर्व का वर्णन दिया गया है, प्रायश्चित का पर्व। यहूदी एक देश के रूप में प्रभु यीशू मसीह पर विश्वास करने जा रहे हैं। यह भविष्यवाणी है। अब कल्पना कीजिए, प्रायश्चित के दिन बहुत

से लोग तम्बू के द्वार पर इकट्ठे हुये हैं, वे अपनी पाप बलि और अपराध बलि लेकर आए हैं। वे भीतर नहीं जा सकते, परन्तु जो पशु वे लाए हैं, उस पर हाथ रखकर वे अपने पापों को मान लेते हैं। उनके बदले में याजक द्वारा उस पशु का बध किया जाता है। महायाजक अपने कपड़े उतार कर साधारण कपड़े पहनता है, और लोहु की लेकर पर्दे के पीछे महापवित्र स्थान में जाता है। वह लोहू परमेश्वर की 'दया के सिंहासन' पर छिड़का जाता है, जो कि दो करूबों के बीच में है। तब स्वर्ग से ईश्वरीय आग आती है, मनुष्य द्वारा उत्पन्न आग नहीं, परन्तु स्वर्ग से आग आती है, और लोहू को भस्म कर देती है। इसका मतलब है कि पवित्र परमेश्वर ने लोगों द्वारा लाए गए बलिदान को ग्रहण कर लिया है। तब महायाजक बाहर आता है और लोगों को बताया है "लोगों, आनन्दित हों! तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हारे पापों को क्षमा कर दिया है। तुम्हारे बदले में मैं भीतर गया और मैंने पवित्र स्थान में लोहू चढ़ाया। मैंने स्वर्ग से पवित्र आग आते देखी और लोहू भस्म हो गया। इसका मतलब है परमेश्वर सन्तुष्ट है, और उसने तुम्हारे पाप क्षमा किये हैं।" पुराने नियम काल में सारी जाति के लिए यह सबसे बड़ी खुशी का दिन होता था। ऐसा वर्ष मे एक बार होता था।

इब्रानियों ९ अध्याय के अनुसार प्रभु यीशु मसीह अपने खुद के लोहू को लेकर स्वर्गीय स्थान में गए। जैसा भजन १६:९ में भविष्यवाणी की गई थी; "क्योंकि तू मेरे प्राण को अधोलोक में न छोड़ेगा, न अपने पवित्र भक्त को सड़ने देगा।" हमारे प्रभु का लोहू कभी नहीं सड़ा। हम चाहें कितने ही ताकतवर क्यों न हों जैसे ही हमारे हृदय की धड़कन बन्द होती है, हमारे शरीर सड़ने लगते हैं। इसीलिए मृत शरीर को लम्बे समय तक सुरक्षित रखने के लिए बर्फ का उपयोग करते हैं। परन्तु प्रभु यीशु मसीह का शरीर कभी नहीं सड़ा। वह पूर्णत: पवित्र

था। वह पवित्र आत्मा से, पवित्र लोहू से जन्मा था। जब उसे लोहे के कोड़ों से मारा गया, तब लोहू निकल आया। जब उन्होंने काँटों का मुकुट उसके सिर पर रखा, लोहू निकल आया। जब उसके हाथ और पैर छेदे गए, लोहू निकल आया। जब सिपाहियों ने उसकी बगल में भाला मारा, लोहू निकल आया। फिर यह लोहू कहाँ गया? यह सड़ा नहीं, यह शुद्ध लोहू है। वह स्वर्ग चला गया। हमारे लिए उसे अपना लोहू स्वर्ग ले जाना पड़ा। हमें पवित्र करने के लिए, वहाँ से लोहू को छिड़का जाना पड़ा/

रोमियों ४:२५ में प्रभु का वचन कहता है; "वह हमारे अपराधों के लिए पकड़वाया गया, और हमारे धर्मी ठहरने के लिए जिलाया भी गया।" इसका मतलब है कि वही जीवन जिससे वह फिर से जिन्दा हुआ हमारे हृदयों में उण्डेला जाय। ऐसा मत सोचिए कि केवल पाप मान लेने और पश्चाताप् करने से हमारे पाप हटा दिए जायेंगे केवल पुनरुत्थान की सामर्थ के द्वारा हम धर्मी बनते हैं। यह सबसे पवित्र सामर्थ है। यह आत्मिक सामर्थ शुद्ध की गयी आत्मा में ही ग्रहण की जा सकती है। पापी होने के नाते हम सब में दोषी और भ्रष्ट आत्मा है। हम अपने विचारों, शब्दों और कार्मों के द्वारा जो भी पाप करते हैं, वे हमारे हृदयों पर खोदे जाते है। हम जो कुछ आवाज करते या बोलते हैं, उसे रिकार्ड करने के लिए आजकल टेप रिकार्डर काम में लाते हैं। यहाँ तक कि खाँसी भी रिकार्ड हो जाती है। हम उस समय उसको नहीं सुन सकते परन्तु बाद में सब आवाजे सुनी जा सकती हैं। टेप रिकार्डर की तरह ही, हम जो कुछ सोचते, बोलते या करते हैं, हमारी आत्मा में लिखा जाता है। हम लगातार हर क्षण भ्रष्ट होते जाते हैं और इस गन्दगी के कारण परमेश्वर का जीवन हममें नहीं आ सकता। उस जीवन के बिना हम उसे, "मेरा ईश्वर" कहकर नही पुकार सकते।

हम परमेश्वर को “मेरा पिता” कहते हैं, क्योंकि हम उसके द्वारा उत्पन्न हुए हैं। उसका जीवन हममें आया है। हम अपने चाचाओं या मामाओं को हमारे पिता नहीं कह सकते, न हम अपने पड़ोसियों को अपने पिता कह सकते हैं। जिस पुरुष के द्वारा हम उत्पन्न होते हैं, उसे ही हम पिता कहते हैं। जब तक हम परमेश्वर का जीवन ग्रहण न कर लें हम उसे “हमारा ईश्वर” नहीं कह सकते। उसका जीवन पुनरुत्थान की सामर्थ है। वह पवित्र ईश्वर है। जब तक हम शुद्ध न हो जाएँ, वह अपना जीवन हममें नहीं उण्डेल सकता। हमारे आन्तरिक भ्रष्ट स्वभाव से संसार की कोई शक्ति हमें साफ नहीं कर सकती। परन्तु प्रभु यीशु मसीह के लोहू में हमें साफ करने, धोने और शुद्ध करने की सामर्थ है। ‘उसके लोहू से हम साफ किए गए’ (१ यूहन्ना १:७); ‘उसके लोहू से हम धोए गए’ (प्रकाशित १:५); और ‘उसके लोहू से हम शुद्ध किए गए’ (इब्रानियों ९:१४)। यदि कपड़ों पर साधारण सी गन्दगी हो तो हम उन्हें झटक देते हैं; यह साफ करने जैसा है। यदि कपड़ा अधिक गन्दा है तो हमें साबुन और पानी की जरूरत पड़ती है; इसे धोना कहते हैं। यदि कपड़े पर आप कोई रंग आदि गिरा दें तो उसका दाग आसानी से नहीं जाएगा। उसे हटाने के लिए आपको शक्तिशाली रसायन की आवश्यकता होती है। इसे साफ करनो शुद्ध करने जैसा होगा। इसी तरह से हमारा प्रभु अपने खून से द्वारा हमें साफ करेगा और हमें पूरी तरह अन्दर से धोएगा।

प्रभुजी मरियम से कह रहे थे, “मरियम, मैं केवल तेरे ही लिए फिर से जीवित नहीं हुआ हूँ, परन्तु जितने भी मेरे पास आते हैं, उन सबके लिए मैंने मृत्यु को जीत लिया है। मैं उन्हें अपना भाग बनाना चाहता हूँ। वे अनन्तकाल तक जीवित रह सकते हैं।” प्रभु हम से कहते हैं, “मैं हमेशा के लिए तुम्हारे साथ रहना चाहता हूँ‘ उसके पहले यह आवश्यक है कि मैं तुम्हें

अपने लोहू से धोऊँ, साफ करूँ और शुद्ध करूँ। तब तुम मुझसे लगातार "मेरे ईश्वर, मेरे पिता" कहकर बातें कर सकते हो। तुम एक बच्चे की तरह मेरे पास निडरता से आ सकते हो। मैं चाहता हूँ, कि तुम मेरे बच्चों की तरह मुझसे माँगों। परन्तु सबसे पहले मुझे स्वर्गीय महायाजक की तरह, अपना खून तुम्हें साफ करने, धोने और शुद्ध करने के लिए चढ़ाने, स्वर्ग पर चढ़ना आवश्यक है।"

स्वर्गीय स्थान से प्रभु पश्चातापी पापियों की आत्मा पर लोहू उण्डेलता है। चेलों ने उसके आश्चर्य कर्म देखे। वे उसके साथ रहते थे, परन्तु उन्होंने पुनरुत्थान की सामर्थ नहीं पाई थी। जी उठने के बाद प्रभु यीशु मसीह अपने खून को लेकर जब स्वर्ग पर चढ़ गए तब वे (चेलें) साफ किए गए और एकदम से उन्होंने पुनरुत्थान की सामर्थ प्राप्त की। परमेश्वर का वचन कहता है, कि अपने पापों को मानने, पश्चाताप करने, अपनी इच्छा-शक्ति, प्रार्थना, बाइबल अध्ययन या आश्चर्य कर्मों को देखने आदि के द्वारा हम धर्मी नहीं बनते। केवल पुनरुत्थान की सामर्थ के द्वारा हम धर्मी बनाए जाते हैं। यह शक्ति तीन तरह से कार्य करती है। पहला, हम धर्मी बन जाते हैं। दूसरा, हम अपनी संसार की परीक्षाओं तकलीफों पर जय पाते हैं; जैसा पौलुस फिलिप्पियों ३:१०; ४:१३ में कहता है। और तीसरा, एक दिन हमें अविनाशी देह दी जाएगी। (रोमियों ८:११)।

तभी हम कह सकते हैं, "मैं अनन्तकाल के लिए उसका हूँ। वह मेरा ईश्वर है, मेरा स्वर्गीय पिता है। मैं असका बालक हूँ। मैं अनन्तकाल के लिए उसका हूँ, और हमेशा तक उसके साथ रहूँगा। मैं उसका सहयोगी और साथी रहूँगा।" पुनरुत्थान के बाद चेले उसकी सन्तान बन गए, उसके पहले वे ऊपरवाले कमरे में छिपे हुए थे। परन्तु बाद में वे सारे संसार

को हिला सके (प्रेरित ४:१२,१३)। उनके सब दोषों के धब्बे प्रभु यीशु मसीह के लोहू में धोए गए, साफ किए गए और शुद्धा किए गए थे। और उसी लोहू के द्वारा हम महापवित्र स्थान में ईश्वर के बच्चों की तरह प्रवेश कर सकते हैं (इब्रानियों १०:९)। जब बच्चे घर आते हैं, तो वे, "साहिब, क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ?" करके नहीं पूछते। वे साहस से घर के किसी भी भाग के अन्दर चले जाते हैं। वे आपके बच्चे हैं, और उनका आप पर और आपके घर पर व्यक्तिगत अधिकार है। इसी तरह उसके लोहू के द्वारा हममें उसकी उपस्थिति में आने का साहस होता है। तब हम कह सकते हैं; "वह मेरा ईश्वर है, मेरा पिता है। वह मुझे अन्धकार की घाटी में ले जाएगा और स्वर्गीय स्थानों में हिस्सा देगा और अपने राज्य में अनन्तकाल के लिए राजा बनाएगा।" इसके अनुसार अब मुझे कृपया बताइए, कि क्या आप परमेश्वर के बच्चे हैं? आप उससे कैसे बातें करते हैं? क्या आपको उसके पास जाने और बात करने की स्वतन्त्रता है? या आप उसके पास एक भिखारी की तरह टुकड़ों के लिए जाते हैं? क्या आप कह सकते हैं, "वह मेरा ईश्वर है"४? हमारा प्रभु हम सबको ऐसा अनुभव दें।

अध्याय-५

मेरा बल

हम दिन प्रतिदिन, महीने व महीने, अपने पूरे पूरे जीवनकाल में अपनी शारीरिक और आत्मिक आवश्यकता के लिए उसके बल को कैसे प्रमाणित कर सकते हैं? मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि वह मेरा बल बन गया है, और उसने हर समय मुझे उसका बल माँगना सिखाया है। सबसे पहले मेरे पापों को माफ करने के द्वारा वह मेरा जीवित उद्धारकर्ता बन गया। जब उसने मेरे पाप दर्शाए, मैंने पश्चाताप किया। मैंने कहा, "प्रभु, मुझे बताइए कि क्या मुझ जैसे पापी के लिए कोई आश है? इसमें कोई शक नहीं कि मैंने सब प्रकार के शर्मनाक काम किए हैं। मैं अपने पापों को मानता हूँ। मुझे उसके लिए खेद है।" तब मैंने एक आवाज सुनी, "यह मेरा शरीर है जो तुम्हारे लिए तोड़ा गया; यह मेरा लोहू है जो तुम्हारे पापों को धोने के लिए बहाया गया।" ये शब्द मेरे लिए बिल्कुल नए थे। तब मैंने कहा, "प्रभु, ये शब्द मेरी समझ से परे हैं। ये आपके शब्द हैं, मनुष्य के शब्द नहीं, कोई मनुष्य ऐसे शब्द कभी नहीं बोल सकता। बिना समझे मैं इन पर विश्वास करता हूँ। और मैं विश्वास करता हूँ कि उसकी देह मेरे लिए तोड़ी गई और उसका खून मेरे पापों को धोने के लिए बहाया गया।" तब एक आवाज मे पास आई, "मेरे बेटे, जा, तेरे पाप क्षमा हुए।" मैं पूरी तरह बदल दिया गया। मेरी आत्मा स्वर्गीय आनन्द से भर गई। मैं परमेश्वर की उपस्थिति महसूस करने लगा। छः सप्ताहों में मैंने पूरी बाइबल पढ़ ली।

मेरे मसीही जीवन के आरम्भ के दिनों में जब कि मैं अमेरिका में था, मझे गरीबी से गुजरना पड़ा। मेरे हृदय परिवर्तन के पहले मेरा पैसा दो बैंको में रहता था। बिना पैसे के रहना

क्या होता हैं, मैं नहीं जानता था। उस समय मेरे पिताजी उच्च न्यायालय के एक केस में उलझे हुए थे। मुझे यह बात मालूम नहीं थी। मैंने बहुत से पत्र तथा तार भेजे पर कोई उत्तर नहीं आया। मुझे काम की खोज करनी पडी। मैंने निश्चित किया कि न तो मैं पैसे की भीख माँगूगा और न उधार लूँगा। मैं यह जानता था कि यदि ऐसे हृदय परिवर्तन के बाद मैं भीख माँगूगा या उधार लेने लगूंगा तो इससे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर निन्दा आएगी। मैं जानता था कि मेरे माता पिता भी यह कभी पसन्द नहीं करते थे कि मैं अपने पड़ोंसियों या रिश्तेदारों से भोजन की भीख माँगूँ। परमेश्वर का वचन रोमियों १३:८ में कहता है, "आपस के प्रेम को छोड़ और किसी बात में किसी के कर्जदार न हो।" उन दिनों वहाँ काम न मिलने की समस्या थी। कई हजार लोगों ने अपने काम खो दिए थे और बहुत से लोग जीविका कमाने के लिए घर-घर जाकर बिस्कुट और केक बेचते थे। मैं काम खोज रहा था परन्तु खाली जगह कहीं नहीं थी। मैंने निश्चय किया कि मैं नीचे से नीचा काम ले लूंगा पर भीख नहीं माँगूगा। मेरे पास भोजन नहीं था। जब किसी की रुचि भारत में होती तो वह मुझे अपने घर ले जाकर भारत के विषय में बात करने के बाद एक प्याली चाय पिला देता, और वह मेरे दिन भर का भोजन हो जाती। परन्तु उन दिनों हर परिस्थिति के लिए मैं अपने में एक नया बल महसूस करता था।

कभी-कभी जब दो या तीन दिनों तक हमें समुचित भोजन नहीं मिलता ता हमें सिर-दर्द, पीठ-दर्द होने लगता हैं, और हम कमजोर हो जाते हैं। इन दिनों में तो लोगों को यदि एक प्याली चाय नहीं मिलती तो वे दयनीय महसूस करने लगते हैं। मैं कभी भी न तो भूखा और न ही प्यासा महसूस करता था। मैं केवल इस प्रकार प्रार्थना करता था, "प्रभु अपनी महिमा के लिए मुझे मजबूत और गर्म रख।" मैंने आश्चर्य के साथ यह पाया कि उसने मुझ बल दिया।

ऐसी ताकत किसी भी भोजन से कभी नहीं मिल सकती। काफी पूछताछ और खोज के बाद, मुझे एक बावर्जी का काम मिला। मुझे ७०० स अधिक लोगों का भोजन बनाना पड़ता था। मुझे सन्दुर के सामने लगातार ७ घण्टे खड़ा रहना पड़ता था। मैं जानता था, यदि मैं अपनी सामर्थ से चलूँगा तो मैं यह नहीं कर सकूँगा। मैं पूरे समय प्रार्थना करता रहता था, "प्रभु अपनी महिमा के लिए मेरा हाथ थामिए। मुझे यह नहीं मालूम कि कितना नमक और कितनी मिर्च डालू.....।" मैं प्रार्थना करता जाता और ये सामग्रियाँ डालता जाता। मैंने भारत में भोजन कभी नहीं बनाया था, फिर भी मैंने कभी भी भोजन नहीं बिगाड़ा। प्रभु ने मुझे बल दिया। उसने मुझे ज्ञान दिया।

जब मैंने सुसमाचार फैलाने का काम १९३३ में कराची में प्रारम्भ किया, मुझे प्रतिदिन कई-कई मील सुसमाचार देते चलना पड़ता था। मैं कभी नहीं जानता था कि मुझे सुबह का भोजन या दोपहर का भोजन मिलेगा या नहीं। प्रभु ने मुझे बताया था कि मैं कभी भी, किसी को भी, किसी भी तरीके से, न पत्र से न इशारे से या और किसी भी तरह से अपनी आवश्यक बातों के बारेमें न बताऊँ। फिर भी वे आनन्द के दिन थे। मैं उसकी सायर्थ को प्रमाणित कर सकता था। कई मील मैं बिना भोजन के चलता था; परन्तु कभी भी मुझमें कुड़कुहाहट के विचार नहीं आए। मैं यह परमेश्वर की महिमा और गवाही के लिए बताता हूँ। हम कह सकते हैं; "वह मेरा बल है।" हर शारीरिक कमजोरी में इसको सिद्ध कर सकते हैं। मैंने कई परिस्थितियों में इसे प्रमाणित किया है। एक समय, बीच रात्रि मेरा दरवाजा खटखटाया गया। मैं उठा और दरवाजा खोलने पर एक व्यक्ति को देखा। उसने कहा, "भाई, मुझे इतनी देर से आने के लिए माफ करना। मुझे एक स्वप्न आया था; किसी ने मुझे बताया 'भाई बख्त सिंह के

पास जाओ और उनके भोजन के बारे में पूछो।' इसलिए मैं उठकर रसोई में गया। कृपया मुझे बताइए, क्या आपने आज कुछ भोजन किया है?" मैंने उससे कहा, "मुझे इसके बारे में सोचने दीजिए.....हाँ, हाँ, पूरे दिन भर से मैंने भोजन नहीं खाया है। परन्तु मुझे भूख ही नहीं लगी। मैं बहुत खुश था।"

हर शारीरिक कमजोरी के लिए परमेश्वर बल देता है। कभी-कभी हमें २० से ३० मील चलना पडता था और उसने हमें बल दिया मुझे नहीं मालूम यह कैसे हुआ। परन्तु हमने शारीरिक थकावट महसूस नहीं की। यही बात पवित्र सभाओं के समय देखी जाती है। कुछ लोग केवल एक या दो घण्टे का आराम पाते हैं। परन्तु वे बिल्कुल तरोताजा रहते हैं; वे कभी नहीं कुड़कुड़ाते हैं। दूसरे लोग सात या आठ घण्टे सोते हैं फिर भी कुड़कुड़ाते है। यदि उन्हें सुबह उठा दिया जाय तो नाराज हो जाते हैं। परन्तु वे भी प्रभु की शक्ति को सिद्ध कर सकते हैं। परमेश्वर हमें हर तरह की परिस्थितियों से ले जाता है। वह हमारी सारी आवश्यकताओं में काफी है।

इसके पहले कि दक्षिण भारत में सुसमाचार प्रसार की सभा प्रारम्भ हो १९३८ में प्रभु ने बोझ दिया कि हम १९ दिनों तक पूरी रात्रि प्रार्थना करें। बहुत लोगों ने मुझसे कहा, "हम रात भर प्रार्थना करने के बाद दिन में काम कैसे करेंगे?" कई ईश्वर से डरनेवाले लोगों ने भी कहा, "रात्रिभर प्रार्थना करना असम्भव है, हम चले जाएँगे।" कुछ दिनों बाद हमने उन्हें बताया, कि परमेश्वर चाहता है कि पूरी रात्रि प्रार्थना सभाएँ हों। उन्होंने कहा, "हम बूढ़े लोग हैं; हमसे आने की आशा मत करो।" मैंने उनसे कहा, "कोई जबरदस्ती नहीं है, केवल जिन्हें बोझ है वे आ सकते हैं।" और फिर १९ दिनों तक हम पूरी रात प्रार्थना करते रहे। हम सुबह सभा करते

शाम को सभा करते और रात भर प्रार्थना सभा करते। हम मुश्किल से दो घण्टे की नींद लेते थे। परन्तु न कोई बीमार हुआ, न कमजोर हुआ और न थका। उसके बाद हमने परमेश्वर को भारत के कई भागों में सामर्थ के साथ काम करते देखा। परन्तु इसके पहले हमें पूरी रात्रि की प्रार्थना सभाओं के लिए अलग से सामर्थ की आवश्यकता थी और परमेश्वर ने हमें बल दिया।

कुछ वर्ष पूर्व हममें से कुछ आसाम सभाओं के लिए गए। कुछ लोग जो ऊँचे पहाड़ों पर रहते थे, बहुत दूर से आए। उन्होंने मुझसे विनती की कि एक या दो रात उनके यहाँ सभाएँ करें। प्रार्थना करने के बाद मैं राजी हो गया। उस जगह पहुँचने के लिए हमें बहुत ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों पर, पूरी रात, बिना भोजन किए चढ़ना पड़ा। हमें केवल एक लकड़ी के लट्ठे के सहारे एक खतरनाक पुल पार करना पड़ा। इतनी लम्बी दूरी चलने के बाद हमारे पैर दुखने लगे और उनमें छाले पड़ गए। जब हम नियत स्थान पर पहूँचे तो उन्होंने हमें बताया, "लोग सभा के लिए चार घण्टों से इन्तजार कर रहे हैं, इसलिए भोजन अब अगले दिन ही परोसा जाएगा।" हमने प्रभु से बल देने के लिए प्रार्थना की और उसने अपनी सामर्थ दी। वह एक अद्भूत सभा थी। मैं कमजोरी की बिल्कुल भूल गया था। परमेश्वर ने अपना वचन और स्वतन्त्रता दी, और उसने बहुत से हृदयों को तोड़ा। हमारे साथ ऐसा अनेकों बार हुआ। हमें विश्वास के साथ परमेश्वर से और अधिक बल माँगना चाहिए। यह सारे पाठ किताबों को पढ़ने या और किसी तरीके से कभी नहीं सीख जाते। इस प्रकार से परमेश्वर हमारे लिए और अधिक वास्तविक बन जाता है। हम किसी भी समय, किसी भी स्थन में और किसी भी स्थिति में उसके बल के लिए उससे विनती कर सकते हैं। वह एक विश्वासयोग्य ईश्वर है वह अद्भूत कार्य करनेवाला ईश्वर है। वह कहता है, "मुझे अब परखो।" "तुम मुझ पुकारो और मैं तुम्हें उत्तर दूंगा।"

यदि आप यह महसूस करते हैं कि आपका बोझ भारी है, तो उससे विश्वासपूर्वक अधिक बल माँगिए। फिर आप पर व्यक्तिगत बोझ, घराने का बोझ या और कोई बोझ क्यों न हो प्रभु आपके सारे बोझ को लुढ़का देगा। आप एक नए रूप में परमेश्वर की सामर्थ अपने में आते देखेंगे।

परन्तु सबसे पहले उसे अवश्य ही आपका व्यक्तिगत उद्धारकर्त्ता बनना चाहिए। झूठे अनुभवों के भरोसे न रहें; जीवित अनुभव पाहए। आजकल दाँतों के डाक्टर बहुत अच्छे, साफ, चमकदार, सफेद दाँत बनाते हैं, परन्तु वे शरीर के भाग नहीं हैं। रात के समय वे दांत कहते हैं, "कृपया हमें बाहर निकालिए।" कोई शक नहीं, वे कुछ हद तक उपयोगी होते हैं। परन्तु वे आपका भाग नहीं हैं। आपका शारीरिक जीवन उनमें नहीं बहता। हमें जीवित उद्धारकर्त्ता का व्यक्तिगत, वास्तविक अनुभव होना चाहिए, झूठा नहीं, झूठे दाँतों जैसा नहीं। क्या अ:प गम्भरतापूर्वक और सच्चाई के साथ कह सकते हैं, "हाँ, वह मेरा उद्धारकर्त्ता है, मेरा बल है।" हमारा प्रेमी परमेश्वर इन शब्दों को आपका अनुभव बना दें।

अध्याय- ६

मेरी ढाल

प्रभु हमें दुश्मन के जलते तीरों से बचाने के लिए हमारी ढाल भी है। इफिसियों ६:१६ के अनुसार ढाल युद्ध के शस्त्रों में से एक आत्मिक शस्त्र है, जो कि दुश्मन के चतुराई से भरे आक्रमणों से हमारी रक्षा करने के लिए हमें दी गई है। विश्वास की ढाल के द्वारा ही हम दुष्ट के जलते तीरों को बुझाने के योग्य होते हैं। प्रभु के दासों और सन्तों का उपयोग करता है। उनके दिमागों में शक और भय लाकर वह उनके विश्वास को कमजोर करने का प्रयत्न करता है। परन्तु विश्वास की ढाल की सहायता से हम दुश्मन का झिड़क सकते हैं, और आक्रमणों के ऊपर पूरी जय पा सकते हैं। इस तरह हम उसके द्वारा जिसने हमसे प्रेम किया और अपने आपको हमारे लिए दे दिया, विजेताओं से भी बढ़कर हैं। अन्धकार की शक्तियों को विश्वास के द्वारा बाँधने से मत्ती १८:१८ के अनुसार हम जय पाते हैं। उसी समय हमारा विश्वास दिन प्रतिदिन मजबूत होता जाता है।

हमें वास्तविक और मजबूत विश्वास के योग्य बनने के लिए बहुत ही शुद्ध करने वाली आगों से गुजरना पड़ता है। हम प्रकाशितवाक्य ३:२१ में देखते हैं, प्रभु ने कहा, "जो जाए पाए मैं उसे अपने साथ, अपने सिंहासन पर बैठाऊँगा, जैसे मैं भी जय पाकर अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठ गया ।" परन्तु यहाँ पर हमें याद दिलाया जाता है, कि जयवन्त होने और प्रभू यीशू मसीह की इच्छानुसार उसके सिंहासन पर बैठने के लिए हममें एक मजबूत विश्वास होना चाहिए। प्रकाशितवाक्य ३:१८ में प्रभु ने कहा, "मैं तुझे सम्मति देता हूँ, कि आग में ताया हुआ सोना मुझे से मोल ले.....।" ताया हुआ सोना मजबुत विश्वास को

दर्शाता है, १ पतरस १:७ के अनुसार, "और यह इसलिए है कि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास, जो आग से ताए हुए नाशमान सोने से भी कहीं अधिक बहूमूल्य है; यीशु मसीह के प्रगट होने पर प्रशंसा और महिमा, और आदर कारण ठेहरे।" कई टन साबुन से भी आप सोने को शुध्द नहीं कर सकते। वह केवल आग में ही ताया जाता है। सोने को शुध्द करने के लिए सुनार को अक्सर दो तरह की आग का प्रयोग करना पडता है, नीचे से आग जो उसे गलाती है; और ऊपर से नीली आग की ली जो उसे शुध्द करती है। वह ऊपर से नीली लौ पिघले हूए सोने पर तब तक फुंकता रहता है, जब तक उसमें उसका स्वयं का चेहरा साफ और बिल्कुल स्पष्ट, एक दर्पण की भाँति न दिखने लगे।

इसी तरह से हमें भी अपने जीवन में दो तरह के युध्दों से और कष्टों से गुजरना पड़ता है, जिससे कि हमें ऐसा विश्वास मिल जाय : हमारे ह्रदय के भीतर विरोधी इच्छाओं और भावनाओं का युध्द और बाहर सतावा, कठिनाइयों और परीक्षाओं का युध्द । परन्तु हमे परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं क्योंकि प्रभु यीशु की उस पुरी विजय का दावा कर सकते हैं, जो विजय उसने मृत्यु और शैतान पर हमारी सब आवश्यकताओं को पुरा करने के लिए क्रुस पर हासिल की। इस तरह हम विजेताओं से भी बढ़कर हो जाते है और उसी समय जयवन्त होने के लिए मजबुत विश्वास भी प्राप्त करते है; और हम प्रभु यीशु मसीह के साथ सिंहासन पर बैठने की योग्यता भी प्राप्त करते है।

इसी कारण से, प्रतिज्ञा देने के बाद, अब्राहम और सारा को परमेश्वर, एक बच्चे के लिए २५ वर्ष तक इन्तजार कराता रहा, ताकि उनको मजबूत विश्वास दे सके। जब उनमें शारीरिक रुप से बच्चा उत्पन्न करने की आशा नहीं रह गई, तब वह यह महसूस करने लगे कि

परमेश्वर सर्व शक्तिमान है और उसके लिए कुछ भी कठिन नहीं है। परमेश्वर हमारे जीवन में मजबूत विश्वास लाने के लिए हर तरह की परिस्थितियों का प्रयोग कर सकता है। इसलिए हम परमेश्वर को हर परिस्थिति, हर हर क्लेष जिसमे हमें गुजरना पड़ता है, के लिए धन्यवाद करते हैं; क्योंकि ऐसी परिस्थितियों में वह हमारी ढाल बन जाता है; हमारा विश्वास ताए हुए सोने जैसा बन जाता है। वह एक विश्वासयोग्य परमेश्वर है। १ कुरिन्थियों १०:१३ की उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार, "परमेश्वर सच्चा है; वह तुम्हें सामर्थ के बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, परन्तु परीक्षा के साथ निकास भी करेगा; कि तुम उसे सह सको।" केवल ऐसे मजबूत विश्वास जीवित विश्वास के द्वारा हम अनदेखी बातों की पूरी समझ प्राप्त कर सकते हैं, और हम परमेश्वर की सभी प्रतिज्ञाओं को अपने जीवन में पूर्ण होते देखते हैं। यह हमें उसके साथ अटूट और बिना बाधा की संगति करने में सहायक होता है। विश्वास ही के द्वारा हमें पूरी स्वतन्त्रता और साहस मिलता है कि हम महापवित्र स्थान में उसके प्रभावशाली लोहू के द्वारा, अपनी हर आवश्यकता के लिए प्रभु की दुहाई दे सकते हैं; और हम उसे अपने माँगने और सोचने से बढ़कर कार्य करते देखते हैं। अपनी सब परीक्षाओं और बोझ के लिए प्रभु पर भरोसा रखते हुए, हम इसी विश्वास के द्वारा प्रतिदिन का जीवन आनन्द के साथ बिता सकते हैं। तो हम परमेश्वर का धन्यवाद कर सकते हैं, कि वह हमारी ढाल है, और वह हर उपाय से हमें मजबूत और जीवित विश्वास देता है।

अध्याय-७

मेरी मुक्ति का सींग

अब हम देखते हैं, कि जब दाऊद कहता है, "परमेश्वर मेरी मुक्ति का सींग है," तो इसका क्या मतलब है। जैसे वह कहता है, "वह मेरी चट्टान है, मेरा गढ़ है, मेरा छुड़ानेवाला है, मेरा ईश्वर है.....," इसी तरह, उसी पद में वह कहता है, "वह मेरी मुक्ति का सींग है" (भजन १८:२)। वह एक-एक कदम आगे जा रहा है। अब वह, उसे बचाने के पीछे प्रभु के उद्देश्य को ज्यादा स्पष्ट रूप से देखने लगता है। प्रारम्भ में जब हम अपने पापों से पश्चाताप् करते हैं, तब हम केवल अपने क्षमा किए गए पापों के विषय में सोचते हैं। परन्तु हमें बचाने के पीछे परमेश्वर का उद्देश्य बहुत ऊँचा है। सारी सृष्टि बनाने के लिए प्रभु ने एक ही शब्द कहा था (भजन ३३:६)। वह सृष्टिकर्त्ता है (कुलुस्सियों १:१६,१७)। वह थामनेवाला है; अपने सामर्थ के वचन से वह सारी सृष्टि को थामता है (इब्रानियों १:३)। और इसी प्रकार, उसके केवल एक शब्द से ही सृष्टि का अंत हो जाएगा इब्रानियों १:१२। हम कल्पना कर सकते हैं, कि केवल एक शब्द के द्वारा सारी सृष्टि की रचना करने में हमारे प्रभु की कितनी बड़ी सामर्थ प्रगट होती है। उसने कहा, और वैसा हो गया। परन्तु हमारा छुड़ानेवाला बनने के लिए, उसने अपने आप को खाली कर दिया और अपना सारा शरीर तोड़ जाने के लिए दे दिया। उसने अपने हाथ और पैर छेदे जाने को, अपनी पीठ कोड़े लगाने को और अपना चेहरा थूके जाने को दे दिया। उसके सिर पर उन्होंने काँटों का मुकुट रखा। इस प्रकार हम देखते हैं कि हमारा उद्धारकर्त्ता होने के लिए उसने कितनी महान् सामर्थ दिखाई। हमारा उद्धारकर्त्ता होने के लिए जो सामर्थ उसने दिखाई, वह हमारे सृष्टिकर्त्ता होने के लिए दिखाई गई सामर्थ से ज्यादा

शक्तिशाली है। परमेश्वर के वचन में हम पढ़ते हैं कि प्रभु यीशु मसीह के लोहू के द्वारा छुड़ाए गए लोग उसके साथ अनन्तकाल तक रहेंगे। इसलिए हमें बचाने के पीछे उसका उद्देश्य अवश्य ही बहुत ऊँचा होना चाहिए। हमें अपना बनाने के लिए उसने अपना सब कुछ दान दे दिया। इसी कारण वह हमें अपना बहुत कीमती मोती कहता है, अपनी मीरास, अपना अंश कहता है। इसीलिए भजन का लिखनेवाला कहता है, "वह मेरी मुक्ति का सींग है।"

बाइबिल में सींग, राज्य के विषय में संकेत करता है (प्रकाशित वाक्य १७:१२,१६)। प्रकाशित वाक्य ५:६ में यह शब्द प्रभु यीशु मसीह के राज्य के लिए आया है, "एक बध किया हुआ मेम्ना खड़ा देखा, उसके सात सींग और सात आँखे थी; ये परमेश्वर की सातों आत्माएँ हैं, जो सारी सृष्टि पर भेजी गई हैं।" इसका मतलब है कि जो मार डाला गया है, वही हमको धर्मी बनाएगा। प्रकाशित वाक्य की पुस्तक में 'मेम्ना' शब्द २८ बार आता है। उसी समय उसे 'राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु' कहा गया है (प्रकाशित वाक्य १७:१४, १९:१६,१ तिमोथी ६:१५)। परमेश्वर का मेम्ना बनने के द्वारा उसकी सामर्थ राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के रूप में पूरी तरह प्रदर्शित होती है। आप प्रभु यीशु मसीह की कल्पना एक मेम्ने के रूप में जो आपके सामने खड़ा है, कर सकते है। ऐसा ही यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने उसे देखा और उसके बारे में कहा। जब उसने उसे पहली बार देखा, उसने कहा, "देखो, परमेश्वर का मेम्ना।" उसने यह दो बार कहा। दूसरे शब्दों में, यदि आप उसे राजाओं के राजा के रूप में जानना चाहते हैं, तो पहले आप उसे मेम्ने के रूप में अवश्य जानें।

बहुत से लोग उसे आश्चर्यकर्म करनेवाले भविष्यवक्ता के रूप में जानते हैं। बहुत से लोग कहते हैं कि वह सिद्ध था और वह क्रूस पर बलिदान हूआ। परन्तु वे उसे उद्धारकर्त्ता के रूप में नहीं जानते, एक ऐसा जो उनके बदले एक मेम्ने के जैसे मरा। इसीलिए वे उसके जीवन और बलिदान से लाभ नहीं उठा पाते। वे अन्धकार, पाप और शर्मनाक स्थिति में रहते हैं। उनके पास कोई शान्ति नहीं है। उनके जीवन हारे हुए हैं, क्योंकि वे उसे परमेश्वर के मेम्ने के रूप में नहीं जानते। वे बहुत सी सभाओं में उपस्थित हो सकते हैं, और बहुत से आश्चर्यकर्म देखते हैं। परन्तु वे बिना शान्ति, बिना आनन्द, बिना आशा और बिना जीवन के रहते हैं।

हम इसी मेम्ने को सात आँखों, और सात सींगों के साथ पाते हैं। सात आँखें परमेश्वर की भरपूरी जो प्रभु यीशु मसीह में निवास करती है को दर्शाती है (कुलुस्सियों २:९,१०)। बाइबल में सात नम्बर भरपूरी और सिद्धाता को दर्शाती है। प्रभु चाहता है, कि हम परमेश्वर की भरपूरी से भर जाए, इफिसियों ३:१९ के अनुसार, “और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से परे है, कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ।” परन्तु जो उसे परमेश्वर के मेम्ने के रूप में नहीं जानते वे विश्वास के साथ नहीं कह सकते, “वह मेरे बदले मर गया। उसने मेरी जगह ले ली। उसने मेरा न्याय अपने ऊपर उठा लिया, और उसने मेरे बदले यातना सही।” ऐसा विश्वास हमें परमेश्वर की भरपूरी में अपना हिस्सा लेने के योग्य बनाता है। सात सींग उसके अनन्त राज्य को दर्शाते हैं। जब हम पहली बार उसके पास आए और उसे ग्रहण किया, हमने उसे मेम्ने के रूप में देखा जिसने हमारी जगह ले ली और हमारे बदले मर गया। जब हम आत्मिक रूप से बढ़ते जाते हैं तब दर्शन के द्वारा हम उसे अपने

सृष्टिकर्त्ता के रूप में देखते हैं; राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के रूप में देखते हैं। जब वह दूसरी बार आएगा तब वह राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के रूप में ही प्रगट होगा।

अब दाऊद कह रहा है, "वह मेरी मुक्ति का सींग है।" इसका मतलब है कि दाऊद अब समझ गया था, कि परमेश्वर चाहता है, कि वह राजा बन जाए और उसके साथ अनन्तकाल तक रहे। परमेश्वर चाहता है कि हम भी राजा और याजक बन कर उसके साथ अनन्तकाल तक रहें (प्रकाशित वाक्य १:६,५:९,१०)। यह मत सोचिए कि यह शब्द केवल प्रेरितों और परमेश्वर के दासों के लिए ही हैं। भिन्न-भिन्न जाति, भिन्न-भिन्न भाषा और हर देश के लोग जो प्रभु यीशु मसीह के लोहू के द्वारा छुड़ाए गए हैं, इन शब्दों को गाते हैं, क्योंकि उसने हमे ंअपने अपनी सम्पत्ति और भण्डार बनाने के लिए जो कुछ देना था, सब दे दिया। इसके लिए आत्मिक प्रकाश और विश्वास की जरूरत है, ऐसा जीवित विश्वात जैसा दाऊद का था। उसने यह देखा कि परमेश्वर उसे केवल शाऊल से बेहतर राजा के रूप में ही नहीं देखना चाहता, परन्तु एक स्वर्गीय राजा के रूप में अनन्तकाल के लिए चाहता था। आप कहेंगे, "यह दाऊद के लिए सच हो सकता है, या पौलुस के लिए सच हो सकता है, पर हमारे लिए नहीं। हम बहुत दुर्बल और मूर्ख हैं।" परन्तु मनुष्यों के सामने हम कितने ही दुर्बल या मूर्ख क्यों न हों, अपने प्रभु यीशु मसीह की दृष्टि मे हम बहुत बहुमूल्य है। उसके लिए हम बहुमूल्य मोती के समान हैं। और इसीलिए वह लूका १२:३२ में कहता है, कि वह हमें राज्य देने की इच्छा रखता है। जो प्रभु देता है, हमेशा के लिए देता है। परमेश्वर दाऊद की एक स्वर्गीय राजा के रूप में देखता है, क्योंकि प्रभु यीशु मसीह के लोहू के द्वारा उसे सच्ची मुक्ति मिली

थी। यदि आप भी प्रभु यीशु मसीह के लोहू से धुल जाएँ तो स्वर्गीय राजा बनने के योग्य हो जाएँगे।

इस प्रकार हम प्रभु यीशु मसीह को सात सींगों के साथ देखते हैं, और हमें एक सींग दिया गया है। हमें उसे राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के रूप में जानना है। पृथ्वी पर, अपने आपको लगातार उसके सिर के आधीन, प्रभुत्व और राज्यत्व के आधीन रखकर हम उस ऊँची जगह के योग्य बनाए जाते हैं। तब आप सब साभी-विश्वासियों के साथ मिलकर साहस से कहसकते हैं, "एक दिन जब मेरा प्रभु आकाश में प्रगट होगा, तब मैं अनन्तकाल के लिए स्वर्गीय राजा बन जाऊँगा। वह मुझे अपने साथ स्वर्गीय शरीर देकर ले जाएगा। उस दिन वह मुझे अपने स्वर्गीय राज्य मे स्वर्गीय राजा बनाएगा। अभी पृथ्वी पर मैं चाहता हूँ कि उसके राजत्व के आधीन रखा जाऊँ। वह मेरी मुक्ति का सींग है।" कैसा महान् उद्धार! एक मनुष्य जो कि गन्दे चिथड़ों, सूखी पत्ती, मुर्झाए हुए फुलों के समान है, उसे स्वर्गीय राजा बना दिया गया। इसी उद्देश्य के लिए प्रभु मसीह के पास जो कुछ था, उसने सब दे दिया। उसने अपनी महिमा त्याग दी। उसने अपना सिंहासन और स्वर्गीय राज्य त्याग दिया, और वह नीचे आ गया। हमें धनवान बनाने के लिए, हमें राजा, महान्-राजा, स्वर्गीय राजा बनाने के लिए जो उसके साथ सदा राज्य करेंगे, और हमें सहकर्मी बनाने के लिए वह गरीब बन गया।

परन्तु इस सब का आरम्भ उसका वैसा ही व्यक्तिगत अनुभव होने से होता है, जैसा दाऊद को था। वह मेरी चट्टान है, सच्ची, जीवित और न हिलने वाली नींव है। वह मेरा गढ़ है, और मैं उसमें सुरक्षित हूँ; हर खतरे से पूरी तरह सुरक्षित दुश्मन के हर सम्भावित हमले से सुरक्षित हूँ। वह मेरा छुड़ानेवाला है। वह मुझे मेरे पुराने पापमय स्वभाव से छुड़ाता है, और नया

स्वभाव देता है। वह मेरा ईश्वर है, मेरा अपना ईश्वर है। मैं कभी भी, कहीं भी किसी भी चीज के लिए उसकी दुहाई दे सकता हूँ। वह मेरा बल है : शारीरिक और आत्मिक दोनों। परीक्षा के समय, परखे जाने के समय उसका जीवन और उसका बल मुझे उपलब्ध होता है। मेरे नाशमान शरीर में वह मेरा ईश्वरीय बल बन जाता है और मुझे विजयी जीवन देता है। वह मेरी ढ़ाल है, मेरी उद्धार की ढ़ाल, जो मुझे दुष्ट के जलते तीरों का, सन्देश के तीरों और भय के तीरों का सामना करने के योग्य बनाती है। अब मैं उसे अपनी मुक्ति के सींग के रूप में देखता हूँ। वह चाहता है कि मैं उसके स्वर्गीय राज्य में अनन्तकाल तक राजा बनकर रहूँ। अभी संसार की परीक्षाएँ हमारी तैयारी के लिए हैं, ताकि हम स्वर्गीय राज्य में राजा बनें। नहीं तो बिना अभ्यास के हम इतनी ऊँची जगह कैसे सम्भालेंगे।

अध्याय-८

मेरा ऊँचा गढ़

पिछले सात अध्यायों में हमने भजन संहिता १८:२ में दिए गये सात विचारों को देखा। अब आइए, हम आखिरी विचार को देखें। भजन का लिखनेवाला कहता है, "परमेश्वर मेरा ऊँचा गढ़ है।" हम देखते हैं कि बाइबल के हर पद में बहुत से आत्मिक अर्थ होते हैं। पुराने दिनों में कोई युद्ध जीतने के बाद राजा लोग शत्रु पर बड़ी विजय की याद में ऊँचे गढ़ (विजय स्तंभ) बनाया करते थे। कुछ स्थानों पर वे कुछ लोगों की याद में ऊँचे गढ़ (स्तंभ) बनाया करते थे। वाशिंगटन में एक बहुत विख्यात राष्ट्रपति हो गये जिनका नाम अब्राहम लिंकन था। उनके दिनों में ही दासों की प्रथा समाप्त की गई थी। उसके पहले नीग्रो दासों को बाजार में बेचा जाता था। अब्राहम लिंकन एक अच्छा विश्वासी होने के कारण दास की प्रथा से लड़े। इस उद्देश्य को प्राप्त करने में उन्हें अपने प्राण देने पड़े। अब यादगारी के रूप में उन्होंने अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन में एक ऊँचा गढ़ बनवाया है।

दाऊद को पलिश्तियों को हराने के लिए अनेकों युद्ध लड़ने पड़े। परन्तु यहाँ पर वह आत्मिक विजय के बारे में बता रहा है। कीचड़ में धँसते हुए एक पापी के रूप में उसने अपनी स्थिति को देखना शुरू किया। अफ्रीका के बहुत से भागों में दलदल होता है। ऊपरी सतह पर वह अच्छी जमीन दिखती हैं, परन्तु यदि कोई उस पर कदम रख दे तो वे अपने को धँसते हुए पाएँगे। वे जितना उसमें से निकलने का प्रयत्न करते हैं उतना ही धँसते जाते हैं। इसी तरह कितने शक्तिशाली जानवर जिन्दा गाड़े जाते हैं। उन्हें किसी तरह की खींचनेवाली शक्ति से खींचे कर बाहर निकाला जा सकता है। यदि वे उन्हें बाहर निकालना चाहें तो एक ज्यादा बड़ी

और अधिक सामर्थी बल की आवश्यकता होती है। पापी होने के कारण हम सब बहुत गहरे और भयानक गड्ढे में पड़े हुए हैं। ऐसे भयानक गड्ढे और दलदल से कोई हमें नहीं निकाल सकता। इसीलिए हमारा प्रभु यीशु मसीह इस संसार में आया। वह मनुष्य बन गया, और हमें अपने सामर्थी हाथों द्वारा बाहर निकालने के लिए हमारे लिए मर गया, फिर से जीवित हो उठा।

पापी होने की वजह से हम शैतान के हाथों में फँसे हुए होते हैं। हमें शैतान की शक्ति से बाहर आना होता है। प्रभु यीशु मसीह ने हम सब के लिए मृत्यु पर जय पाई है और इस तरह वह हमारा ऊँचा गढ़ बन जाता है। उसमें हम मृत्यु से निकल कर जीवन में प्रवेश करते हैं (युहन्ना ५:२४)। यह कोई भी देख सकता है, कि परमेश्वर के लोग कितनी शान्ति के साथ मरते हैं। मैंने कुछ विश्वासियों को महिमा में बुलाए जाने के पहले बहुत दु:ख और यातना में देखा है। परन्तु जब उनका महिमा में जाने का समय आया, अचानक ही उनका चेहरा बदल गया। उनके चेहरे पर परमेश्वर का प्रकाश चमकते हुये देखा जा सकता था, जैसे की वे शान्ति के साथ सो रहें हों। वे कह रहे थे, "हे मृत्यु तेरा डंक कहाँ है? हे मृत्यु तेरी जय कहाँ है?" (१ कुरिन्थियों १५:५५) इसके विपरीत और लोग जब मरते हैं, तो उनके चेहरे पर केवल अन्धकार दिखाई देता है। 'मौत' शब्द हमारे हृदयों में डर और भय उत्पन्न करता है और हमारे चेहरों को भयभीत और अन्धकारमय बना देता है।

उन्नति और समृद्धि दिखाने के लिए भी ऊँचे गढ़ बनाए जाते हैं, जापान के टोकियो शहर में, उन्होंने एक बहुत ऊँचा गढ़ भिन्न-भिन्न दुकानों की वृद्धि दिखाने के लिए बनाया है। अब प्राय: हर दिन अमेरिका और योरोप से लोग उस ऊँचे गढ़ को देखने टोकियो जा रहे हैं। परन्तु ऊँचा गढ़ मसीह यीशु एक विश्वासी के फलवन्त होने का प्रदर्शित करता है। नया जन्म

पाने के पहले, हम सब फल रहित जीवन जी रहे थे; हार की जिन्दगी और शर्म की जिन्दगी। हम शर्मनाक काम कर रहे थे, अपना समय, शक्ति और धन व्यर्थ व्यय कर रहे थे। परन्तु हमें बहुतायत से फलवन्त बनाने के लिए प्रभु यीशु मसीह हममें आए। मैंने ऐसे लोगों को देखा है, जो पहले बाँझ जीवन और पराजय का जीवन जी रहे थे, परन्तु अब परमेश्वर के सामर्थी जन बन गए हैं।

कुछ जगहों को चेतावनी देने के लिए ऊँचे गढ़ों का प्रयोग किया जाता है : समुद्री किनारे के कुछ भागों में हम छिपी हुई चट्टानें पाते हैं। दक्षिण भारत में क्विलोन के नजदीक समुद्र के किनारे के कुछ भागों में छिपी हुई चट्टानें हैं। इसलिए उन्होंने वहाँ पर प्रकाश-घर बनाया है। वह एक बहुत ऊँचा गढ़ है, और उसका प्रकाश बहुत तेज है, रात-दिन वह प्रकाश वहाँ से आने वाले जहाजों को सतर्क करने के लिए चमकता रहता है। नहीं तो उन छिपी हुई चट्टानों से टकराकर बहुत से जहाज नष्ट हो जाएँगे। इसी प्रकार से प्रभु भी लोगों को खतरे के विरुद्ध चेतावनी देता रहता है और परिणाम स्वरूप वह हमें भी दूसरों को चेतावनी देनेवाला बनाता है।

वर्ष १९३५ में, उत्तरी भारत में क्वेटा शहर में मुझे सुसमाचार प्रचार की सभा में आमंत्रित किया। मैं १९३४ में वहाँ पहले गया था। अत: मैंने सोचा, मुझे क्वेटा जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। परन्तु जब मैंने प्रार्थना की, प्रभु ने मुझे वहाँ जाने को कहा। मैंने दूसरी बार, तीसरी बार प्रार्थना की, पर बार-बार मुझे वही उत्तर मिला। इसलिए मैं वहाँ गया। मेरे मित्रों में से एक, श्री लाकवुड, एक अंग्रेज थे और उन्होंने कुछ ही समय पहले नया जीवन पाया था। उन्हें भी क्वेटा के लोगों के लिए बोझ था। वह स्थान सदोम और अमोरा के जैसा था।

बहुत से लोग पामय अभिलाषाओं की पूर्ति के लिए उधर जाते थे। मेरे मित्र ने एक सेना के गिरजाघर में सभाओं का प्रबन्ध करने में सफलता प्राप्त कर ली। इसके पहले उस भवन में उन्होंने कभी भी ऐसी सुसमाचार की सभाएँ नहीं की थीं। इसके अलावा वह भवन शहर से चार मील दूर था। जो सभाओं में आना चाहते थे उन्हें एक ओर का रास्ता ही, तीन या चार मील का तय करना पड़ता था।

हमारी सभाएँ २९ मई से ३१ मई तक थीं। ३१ मई को प्रभु ने, परमेश्वर के क्रोध के विषय में बोलने की स्वतन्त्रता मुझे दी। बहुतों ने अपने पापों से मन फिराया। तब मध्यरात्रि में भयंकर भुईडोल आया और १८ सेकण्ड के अन्दर ५८,००० लोग मर गए, जो कि उस स्थान की ९२% जनसंख्या होती थी। जो जीवित वचे थे, उनमें से बहुतों की हड्डियाँ टूट गई थीं। वह बहुत ही दु:खद दृश्य था। परन्तु विश्वासियों में से एक की भी कोई हड्डी तड़की तक नहीं थी। एक लडकी एक अस्पताल में नर्स थी। ठीक समय पर उन लोगों ने पश्चाताप् किया और बचा लिए गए। इस तरह हमारा ऊँचा गढ़ प्रभु यीशु मसीह हमारा चेतावनी देनेवाला गढ़ बन जाता है। वह दूसरों को चेतावनी देने के लिए हमें उपयोग में लाता है। जब हम प्रभु यीशु के साथ मिलकर दूसरो के लिए प्रार्थना और निवेदन करते हैं तब बहुत से लोग बचाए जाते हैं। यह हमने अनेक वर्षों से देखा है। परमेश्वर ने हमें यह आदर और सौभाग्य यह दिखाने को दिया है, कि वह हमारा ऊँचा गढ़ बनकर हमें चेतावनी देता है, ताकि हमारे रिश्तेदार और मित्र भी बचाए जाएँ।

फिर रात के समय उड़नेवाले हवाई जहाजों की सहायता के लिए हवाई अड्डों में ऊँचे गढ़ बनाए जाते हैं। वे इन जहाजों को बताते हैं, कि उन्हें कैसे और कहाँ उतरना है। हवाई अड्डे

के ऊँचे गढ़ से आने वाले प्रकाश के कारण चालक सही पट्टी पर जहाज को ले उतरता है। यदि चालक इसमें गलती कर दे तो बहुत से जीवन खतरे में पड़ जाएँगे। कभी-कभी कोहरा या घना बादल छा जाता है। ऐसे समय में हवाई-अड्डे का प्रकाश-घर बहुत आवश्यक हो जाता है। हमें सही मार्ग पर रखने के लिए प्रभु यीशु मसीह हमारा ऊँचा गढ़ और प्रकाश-घर है। वह हमें बताता है, "उस मार्ग पर मत जाओ, इस मार्ग पर जाओ।" इस प्रकार हम बहुत सी गलतियाँ करने से बच जाते हैं। परन्तु हमें ऐसे विश्वासी भी मिलते हैं जो बहुत दु:खित रहते हैं। वे ब्याह में गलत चुनाव करते हैं; ऊँचे गढ़ से संचालित होने के बदले वे मनुष्यों के द्वारा चलाए जाते हैं, अपने चाचा, मामा, चाची, मामी, मित्रों या रिश्तेदारों द्वारा चलाए जाते हैं। प्रभु यीशु मसीह जो हमारा ऊँचा गढ़ है वे उसके नियन्त्रण में नहीं रहते।

अब हम देखते हैं, कि बहुत से स्थानों पर घण्टाघर होते हैं। घण्टाघर की तरफ के देखने द्वारा कोईभी व्यक्ति ठीक समय जान सकता है। लन्दन शहर में वेस्ट-मिनिस्टर-एवे में एक ऊँचा घण्टा घर है और उसमें एक बहुत बडी और पुरानी घड़ी लगी हुई है। वह लोगों को समय पर आने में सहायता करती है। वे उसे बहुत दूर से देख सकते हैं। उनका समय व्यर्थ नहीं होता। इसी तरह से हम भी बार-बार अपने प्रभु द्वारा चिताए जाते हैं। सबसे पहले, हमारा पूरा समय प्रभु के हाथ में है। अब हम अपना समय व्यर्थ नहीं कर सकते। परन्तु दु:ख के साथ यह कहना पड़ता है कि बहुत से विश्वासी अपना समय व्यर्थ करते हैं। बहुत से सुबह जल्दी उठ जाते हैं; परन्तु प्रभु के साथ एकान्त में समय बिताने के बदले वे गपशप या दाँत साफ करने में सारा समय व्यतीत कर देते हैं। इसी कारण उनका सारा दिन मुसीबत और असफलता में बीतता है। वे चिन्ताओं और भय से भरे रहते है। परन्तु जो लोग प्रभु के साथ लगातार शान्त

समय बिताते हैं, और परमेश्वर को सुबह अच्छा समय देते हैं, बाइबल पढ़ते और प्रार्थना करते हैं, वे यह पाते हैं, कि उनका पूरा दिन आशीषित और फलवन्त होना है। उन्हें ईश्वरीय बल दिया जाता है, और पूरे दिन के लिए उन्हें ईश्वरीय अगुवाई मिलती है। हमारी प्रभु हमारा घण्टाघर है। वह हमें याद दिलाता है कि समय बीत रहा है और हमें उसे व्यर्थ नहीं करना है। जीवन छोटा है, समय का सबसे अच्छा उपयोग करो। फालतू बातों और गपशप में उसे बरबाद मत करो। अपने समय का सदउपयोग परमेश्वर की महिमा के लिए या किसी की भलाई के लिए करो। वह अद्‌भूत ऊँचा गढ़ है। परन्तु अब प्रश्न उठता है, कि क्या वह आपका ऊँचा गढ़ बन गया है?

पुराने समय में ऊँचे गढ़ का प्रयोग चौकीदारों द्वारा शत्रु पर दूर से ही और पहले से ही निगरानी रखने के लिए होता था। जब भी वे शत्रु को घोड़ो और युद्ध की सामग्रियों के साथ आते देखते थे, वे लोगों को सतर्क कर देते थे। कभी-कभी शत्रु मध्य रात्रि में आया करता था। उनकी चेतावनी पर ध्यान देकर लोग तैयार हो जाते थे। शस्त्रों से सुसज्जित होकर शत्रु का सामना करने को वे तैयार हो जाते थे। प्रभु हमारा निगरानी का ऊँचा गढ़ है। शैतान के आने वाले आक्रमण की वह हमें पहले ही जानकारी दे देता है। वह कहता है, “अब तुम बहुत सतर्क हो जाओ, नहीं तो तुम किसी परीक्षा में गिर पड़ोगे।”

कुछ स्थानों में, अशोक स्तम्भ जैसे, ऊँचे गढ़ पर कुछ शिक्षाएँ या सिद्धान्त लिखे जाते है। इसलिए वहाँ से गुजरते समय, लोग इन लेखों को पढ़ते हैं। हमारा प्रभु पवित्र जीवन रखने वाला हमारा ऊँचा गढ़ है; ताकि हम परमेश्वर के पूरे उद्देश्य तक पहुँच सके। दूसरी जगहों में ऊँचे गढ़ों का उपयोग युद्ध में जीते गए युद्ध के शस्त्रों को रखने के लिए किया जाता है। वह

एक विजय चिन्ह के रूप में उन्हें यह याद दिलाता है, कि दुश्मन ने किस प्रकार के शस्त्रों का उपयोग किया था। यदि वे दुश्मन को पराजित करना चाहते हैं, तो उन्हें यह अवश्य मालूम होना चाहिए कि दुश्मन के पास किस प्रकार के शस्त्र हैं। केवल प्रभु यीशु मसीह ही जानते हैं, कि शैतान कैसे कैसे हथियार काम में लाता है। शैतान किसी भी तरह आये, वह गरजने वाले सिंह के रूप में आये या फाडनेवाले भेडिए के रूप मे, प्रकाशमान स्वर्गदूत के रूप में आये या बाढ़ के रूप में अथवा दोष लगाने वाले के रूप में आये; हमारा प्रभु जानता है कि उसे कैसे पराजित किया जाय। इसलिये आप स्वाभाविक रूप में उसके पास जाकर प्रार्थना कर सकते हैं, "प्रभु मुझे इस समय बचाइए और सुरक्षित रखिए।" इस प्रकार से आप निश्चित रूप से कह सकते हैं, उसे अपना ऊँचा गढ़ बनाकर मुझे बहुत लाभ हुआ है, मैं सारी आशीषों से भर गया हूँ।

सारांश में, भजन १८:२ के ये आठ शब्द आपके हृदयो में गहराई से खुद जाने दीजिए; और फिर प्रार्थना करिए, "हे प्रभु, इन शब्दों को मेरा प्रतिदिन का अनुभव बनाइए।" परन्तु याद रखिए, यदि उसे हमारी चट्टान बनान हैं, हमारी नींव बनान है, तो पहले हमारे पाप क्षमा होने चाहिए। यही शुरुआत है। जब तक हमारे पाप क्षमा नहीं होते, हमारा प्रभु हमारी सहासता नहीं कर सकता । वह हमें सिखा नहीं सकता।

क्या आप सच्चाई पूर्वक तथा निश्चित रुप से कह सकते हैं, "मेरे पाप क्षमा हो गए, वे गाड़े गए और भुला दिए गए हैं, जितना दूर पूर्व से पश्चिम है, उतने ही दूर वे हटाए गए हैं, और वे एक काले बादल की तरह मिटा दिए गए है?" यदि नहीं, तो आप अभी सच्चा पश्चातापी हदय लेकर उसके कदमों पर आ सकते हैं, "प्रभु, मेरे निमित मरने के लिए मैं आपको

धन्यवाद देता हूँ; मेरे निमित अपने प्राण देने के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। मुझे मेरी सारी अशुद्धता से धोने के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। ऐसी सरल प्रार्थना और सरल विश्वास आपको इस अनुभव की प्रारम्भिक अवस्था में ले आएगा। तब आप भी कहेंगे, “प्रभु, आप मेरी चट्टान, मेरा गढ़, मेरा छुडानेलावा, मेरा ईश्वर, मेरा बल, मेरी ढ़ाल, मेरी मुक्ति का सींग और मेंरा ऊँचा गढ़ हैं।”काश, हमारा प्रभु ऐसा करे।